अनुसूचित जनजातीय छात्रों को शिक्षा से वंचित करने का राजस्थान सरकार का कुचक्र; विरोध में उतरे छात्र

हिन्दीभाषी राज्यों में पैठ बढ़ाने के लिए मिशनरियों का नया फण्डा

वृहत्तर नगालैण्ड की मुहिम को अन्तिम परिणति तक पहुंचाने में जुटे मिशनरी !

ॐ

वार्षिक ₹ 200 मूल्य ₹ 10

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

सितम्बर (16-30), 2011

हिन्दू विश्व

- भारत पर नि:शब्द आक्रमण
- इतना झुके कि घुटने टेक कर भारत तोड़ने पर आमादा ?
- एक बार पुनः करगिल युद्ध के मुहाने पर भारत ?

श्री अशोकजी सिंहल का लखनऊ में नागरिक अभिनन्दन समारोह

जन्म शताब्दी वर्ष

महिला क्रांन्तिकारी
प्रीतिलता वद्देदार
जन्म : 5 मई, 1911
बलिदान: 24 सितम्बर,1932

यदि भ्रष्टाचार मिटाना है तो सनातन धर्म की ओर जाना होगा : डॉ० स्वामी

विहिप-स्थापना दिवस/ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विविध आयोजन

मन्दसौर (मध्य प्रदेश)

नमो देव्यै महामाये विश्वोत्पत्तिकरे शिवे।
निर्गुणे सर्वभूतेशि मातः शंकरकामदे।।

त्वं भूमिः सर्वभूतानां प्राणः प्राणवतां तथा।
धीः श्रीः कान्तिः क्षमा शान्तिः श्रद्धा मेधा धृतिः स्मृतिः।।

त्वमुद्गीथेऽर्धमात्रासि गायत्रीव्याहृतिस्तथा।
जया च विजया धात्री लज्जा कीर्तिः स्पृहा दया।।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व- विहिप स्थापना दिवस

सत्यनारायणपुरम्, विजयवाड़ा (आन्ध्र) में कान्हा के वेश में सजे चित्ताकर्षक बालक तथा आयोजित रैली।

जोधपुर में माखन खाते कान्हा (राज.)

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

‘अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं’

–पी. साइरस

वर्ष 14, अंक 17
सितम्बर (16–30), 2011
आश्विन कृष्ण – शुक्ल पक्ष
वि.सं.–2068
युगाब्द – 5113

संरक्षक मण्डल
श्री विष्णुहरि डालमिया
श्री अशोक सिंहल,
आचार्य गिरिराज किशोर

सम्पादक
मानवेन्द्र नाथ पंकज

परामर्शदाता
सर्वश्री
डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा,
रघुनन्दन प्रसाद शर्मा,
राजेन्द्र शर्मा, शरद लघाटे
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार

व्यवस्था – श्री दूधनाथ शुक्ल
सज्जा – श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
‘हिन्दू विश्व’
संकटमोचन आश्रम,
प्रभाग – 6
रामकृष्ण पुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 011–26178992,
011–26103495
ईमेल–hinduvishwa@gmail.com

वैधानिक सूचना
- ‘हिन्दू विश्व’ में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- ‘हिन्दू विश्व’ से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

– : मूल्य :–
विदेशों के लिए ......$ 50 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति ....10 ₹
वार्षिक ....200 ₹
त्रिवर्षीय.....................500 ₹
पंचवर्षीय ....800 ₹
दसवर्षीय.................1,500 ₹
पन्द्रह वर्षीय.............2,100 ₹

विहिप-स्थापना दिवस/श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विविध आयोजन 16

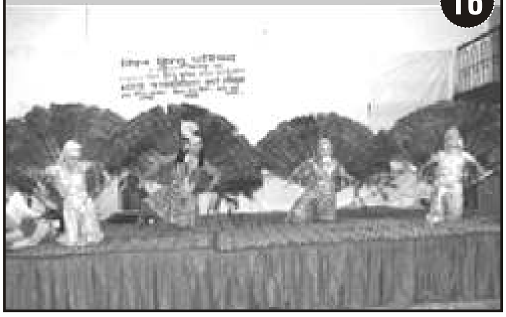

21 **एनजीओ की मनमानी पर अंकुश लगाया जाय : श्री सिंहल**

विहिप

अनुसूचित जनजातीय छात्रों को शिक्षा से वंचित करने का राजस्थान सरकार का कुचक्र; विरोध में उतरे छात्र 04
संन्यासी नहीं प्रन्यासी चाहिए! 18
दस हजार युवाओं ने लिया अखण्ड भारत का संकल्प 19
धर्म प्रसार 20
हरिद्वार में सेवा शिविर 20
‘भारत की हिन्दू राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठापना नरसिंह जोशीजी को सच्ची श्रद्धांजलि’ 22

स्तम्भ

सम्पादकीय
एक बार पुनः करगिल युद्ध के मुहाने पर भारत ? 02–03
कविता 09
......पुण्य प्रवाह हमारा...................................12
पाठकीय अभिमत..14
फूल नहीं चिंगारी......... 14
प्रेरक प्रसंग 15
स्वास्थ्य वीथी 16

अन्य

हिन्दीभाषी राज्यों में पैठ बढ़ाने के लिए मिशनरियों का नया फण्डा 03
वृहत्तर नगालैण्ड की मुहिम को अन्तिम परिणति तक पहुंचाने में जुटे मिशनरी ! 04
पहली बार लश्कर ने माना, कातिल उसके लोग...............................09
चलो सिमरिया घाट (बिहार)...15
बाबा आमटे को कुष्ठरोगियों की सेवा में दिखता था भगवान.................17
चीन ने खोजा ब्रह्मपुत्र व सिन्धु नदियों का उद्गम.............................23
अयोध्या मामला : उच्च न्यायालय ने सीबीआई से मांगा जवाब...............24

मुखपृष्ठ-चित्र परिचय

मन्दसौर (म.प्र.) में आयोजित चल समारोह तथा धर्म सभा को संबोधित करते विहिप–क्षेत्र संगठन मंत्री अम्बरीश सिंह तथा जिलाध्यक्ष–अर्जुन डाबर, जिला मंत्री ऊदल सिंह परिहार, प्रांत सहमंत्री मधुश्याम शर्मा, बजरंग दल के विभाग संयोजक गोपालजी एवं मातृशक्ति की प्रांत सत्संग प्रमुख।

आलेख

भारत पर निःशब्द आक्रमण ....जोगिन्दर सिंह 05
आयोडीनयुक्त नमक : स्वास्थ्य के लिए घातक!...................................डॉ0 सुशील गुप्त 06
राष्ट्रगान से ‘सिन्ध’ हटाने की माँग; भारतीय संस्कृति पर पाद प्रहार ! ....हरिकृष्ण निगम 07
इतना झुके कि घुटने टेक कर भारत तोड़ने पर आमादा ? ....डॉ. प्रवीण तोगड़िया 10

मानवेन्द्र नाथ पंकज

एक बार पुनः करगिल युद्ध के मुहाने पर भारत ?

जवानों का सम्मान बहाल हो

विगत दिनों दिल्ली में सेना की आर्टिलरी डिवीजन के एक जवान ने गोली मारकर 'आत्महत्या' कर ली। उसकी ड्यूटी वाइस एडमिरल शेखर सिन्हा के आवास पर लगी थी। उक्त घटना पहली नहीं है, इससे ऐसा लगता है कि आज का जवान अपने अधिकारियों, केन्द्र सरकार तथा दुश्मनों के सीधे निशाने पर है तथा परिवारिक समस्याओं व ड्यूटीगत समस्याओं से जूझ रहा है। किंकर्त्तव्यविमूढ़ होने पर आत्महत्या के लिए मजबूर होता है या किया जाता है! केन्द्रीय प्रतिरक्षा मंत्री ने लोकसभा में स्वीकार किया है कि पिछले तीन वर्षों में सेना के 302 जवानों द्वारा आत्महत्या की सूचना मिली है। (भाषा, 5 सितम्बर) यक्ष प्रश्न है कि क्या सरकार को इसके कारणों की पड़ताल नहीं करनी चाहिए?जवानों की समस्याओं पर अगस्त के पूर्वार्द्ध में रक्षा मंत्रालय की स्थाई संसदीय समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की है। केन्द्र सरकार इस रिपोर्ट पर कार्रवाई करने से कतरा रही है परन्तु यदि इसे स्वीकार किया जाय तो जवानों को समस्याओं से निजात मिल सकती है और वे बेहतर ढंग से राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभा सकते हैं।

रिपोर्ट में सेना के भीतर हजारों प्रशिक्षित सैनिकों को अधिकारियों के बतौर सहायक काम करने की परम्परा को समाप्त किए जाने की संस्तुति की गई है। परन्तु रक्षा मंत्रालय व थल सेना मुख्यालय इसे समाप्त किए जाने के हक में नहीं है। स्मरण रहे नौसेना व वायुसेना में यह परम्परा नहीं है। आखिर थल सेना में ही इसे लागू रखने की जिद पर क्यों अड़ी है केन्द्र सरकार?

बताया जाता है कि थलसेना में जिस प्रकार स्वतंत्रता के पूर्व अफसर व जवान में मालिक व गुलाम का संबंध रहता था, वही परम्परा आज भी बदस्तूर जारी है। सूत्र बताते हैं कि जवान गुलामों से भी बदतर जीवन जी रहे हैं। इसी परम्परा के नाम पर अधिकारी जवानों का शोषण करते है। रहने–खाने–चलने, ड्रेस के लिए भी जवान के लिए अलग नियम हैं। सुविधाएं अफसर हड़प लेते हैं, जवान बेचारा उनके रहमोकरम पर जीने के लिए मजबूर है! हमारे माननीयगण इस गुलामी की परम्परा को समाप्त कराने के लिए सरकार को मजबूर क्यों नहीं करते?जबकि इसमें तो कोई आर्थिक बाधा नहीं है।

> यक्ष प्रश्न है कि क्या हमारे 'भाग्य विधाताओं' को चुल्लू भर पानी में नहीं डूब मरना चाहिए ? कांग्रेसनीत संप्रग सरकार को इस घटना के बाद तो जागना चाहिए था।

इसी प्रकार रिपोर्ट 'एक रैंक एक पेंशन योजना' लागू करने के पक्ष में है। जबकि केन्द्रीय प्रतिरक्षा मंत्री इसके लिए हाथ खड़े कर चुके हैं। रिपोर्ट रक्षा मंत्रालय की जमीनों को घोटाले से बचाने के लिए स्वतंत्र नियामक की आवश्यकता रेखांकित करती है। परन्तु रक्षा मंत्रालय इसके लिए भी तैयार नहीं है। स्मरण रहे जवानों को रहने के लिए मकान नहीं है परन्तु पुणे में सेना की जमीन सेना की सुप्रीम कमान्डर को राष्ट्रपति पद का उनका कार्यकाल समाप्त होने के बाद मकान बनाकर रहने के लिए दी जा रही है।

समिति की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्तुति रक्षा बजट में बढ़ोतरी की है। रिपोर्ट में यह तथ्य भी उभरकर सामने आया है कि साल–दर–साल रक्षा बजट की बढ़ोत्तरी की दर में गिरावट आ रही है। वर्ष 2008–09 में यह 24.15 फीसदी, वर्ष 2009–10 में 24.13 फीसदी थी, जो वर्ष 2010–2011 में तेजी से गिरकर सिर्फ 6.91(?) फीसदी रह गई। समिति के अनुसार यह इसलिए भी चिन्ताजनक है क्योंकि राष्ट्र मुश्किल पड़ोसियों से घिरा हुआ है। समिति ने सेना को उन्नत किस्म के साजो–सामान तथा हथियार–मिसाइलें इत्यादि मुहैया कराने में देरी पर भी चिन्ता जताई है।

स्मरण रहे सुब्रमण्यम समिति ने जवानों की बेहतरी के लिए अनेक संस्तुतियाँ की थीं। परन्तु ब्यूरोक्रेसी इस पर अड़ंगा मार बैठ गई। सुब्रमण्यम समिति का कहना है कि इन्फैन्ट्री के जवान को भरी जवानी (40 वर्ष के आसपास) में सेवानिवृत्त कर दिया जाता है। सेवानिवृत्ति के बाद इनकी मृत्यु जल्दी हो जाती है। इन्हें सेवानिवृत्ति के बजाय केन्द्र सरकार की किसी अन्य सेवा में तद्संबंधित प्रशिक्षण देकर अनिवार्य रूपेण समायोजित किया जाए। परन्तु केन्द्र सकार इससे भी सहमत नहीं दिखती।

जुलाई मास से उत्तरी पश्चिमी सीमा पर भारत एक बार फिर करगिल युद्ध के मुहाने पर खड़ा नजर आ रहा है। आतंकवादियों के विरूद्ध कार्रवाई के समय सेना को हेलीकाप्टरों की मदद देनी चाहिए। ऐसे में जवानों का मनोबल बढ़ाने के लिए रक्षा मंत्रालय की स्थाई संसदीय समिति की संस्तुतियाँ केन्द्र सरकार को स्वीकार करनी चाहिए। जवान को गुलाम बनाने वाली परम्परा तत्काल समाप्त करना समय की मांग है। अन्यथा भूमप्पा जैसे जवान निराशा में आत्महत्या करते रहेंगे, यदि गुलामीपूर्ण जीवन बिताने के बावजूद जीवित बचे रहेंगे तो कांग्रेसनीत संप्रग सरकार उन्हें पाक को 'ईदी' में भेंट देती रहेगी।

हिना के दौरे के बाद पाक सेना हुई हमलावर

ईद के बाद पाकसेना सीज फायर का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन कर भारतीय सीमा चौकियों पर गोले बरसा रही है, जवान जान देकर भी सीमा की सुरक्षा कर रहे हैं, जबकि कश्मीर सरकार जवानों के विरुद्ध पत्थरबाजी करने वाले आतंकियों को आम मॉफी दे रही है। राज्य सरकार की घोषणा के अगले ही दिन इस आम मॉफी से उत्साहित पत्थरबाजों ने पुलिस को अपना निशाना बनाया। केन्द्र सरकार ने इस कदम को विश्वास बहाली की दिशा में उठाया गया सही कदम बताया। जबकि उग्रवादी नेता मीर वाइज फारूक राज्य मानवाधिकार आयोग द्वारा तथाकथित दो हजार कब्रों में पड़े अचिह्नित शवों की जांच की मांग के आधार पर जवानों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग कर रहा है।

याद कीजिए! राजग सरकार के कार्यकाल के दौरान सीमा सुरक्षा बल के कुछ जवानों को मारकर उनका सिर काटकर बांग्लादेश राइफल्स के जवान ले गए थे। कांग्रेस ने इस पर जमकर राजग सरकार की थूका फजीहत की थी। हैरत अंगेज है कि कुपवाड़ा (कश्मीर) जिले के फरकियान गली में घुसपैठियों ने टेंपल पोस्ट के आगे घात लगाकर भारतीय सैन्य गश्ती दल पर हमला किया। ऐसा बताया जा रहा है कि दो भारतीय सैनिकों के सिर काट ले गए। इसमें पाक सेना भी शामिल बताई जाती है। ये जवान थे–उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ व हल्द्वानी के निवासी कुमाऊँ रेजीमेण्ट के हवलदार जयपाल सिंह व लांस नायक देवेन्द्र सिंह। परन्तु रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ने इस असाधारण घटना को साधारण माना। (देखें–दै. जागरण–7जुलाई,2011)

यक्ष प्रश्न है कि क्या हमारे 'भाग्य विधाताओं' को चुल्लू भर पानी में नहीं डूब मरना चाहिए? कांग्रेसनीत संप्रग सरकार को इस घटना के बाद तो जागना चाहिए था। परन्तु वह अपनी साम्प्रदायिक नीतियों से बाज नहीं आ रही है। 26 जुलाई को ही पूर्व सेनाध्यक्ष बी.पी. मलिक ने करगिल विजय दिवस पर आगाह करते हुए कहा था कि यह सोचना सरासर गलत है कि कारगिल युद्ध फिर नहीं हो सकता, क्योंकि सीमा पार परिस्थितियाँ तेजी से हमारे विरुद्ध जा रही हैं।

पूर्व सेनाध्यक्ष की बात सच साबित हो रही है। कुछ दिनों पूर्व भारत दौरे पर आई पाक की विदेश मंत्री हिना ने अलगाववादी नेताओं से भेंट की थी। समूचा देश उनके हुस्न की चर्चा में डूबा नजर आ रहा था, उन्हीं के दौरे के बाद पाक सेना घुसपैठियों को पीछे से समर्थन देने की बजाय आगे बढ़कर उन्हें भारतीय सीमा में प्रवेश करा रही है। सेना प्रमुख जवानों का मनोबल बढ़ाने के बजाय केन्द्र सरकार से उलझते नजर आ रहे हैं। केन्द्र सरकार उन्हें आयु विवाद में उलझाए हुए है।

कुछ महीनों पूर्व संसद की लोक लेखा समिति के अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने पाक अधिकृत 'भारतीय' कश्मीर में चल रहे आतंकी प्रशिक्षण शिविरों पर हमला कर उन्हें समाप्त करने की वकालत की थी। अब ऐसा लगता है इसमें और विलम्ब करना भारत के लिए आत्मघाती हो सकता है क्योंकि पाक चीन के लिए अपनी सीमा खोलने का प्रस्ताव दे रहा है। चीन वैसे भी पाक अधिकृत कश्मीर व लुम्बिनी (भारत–नेपाल सीमा) में अनधिकृत रूपेण मौजूद बताया जा रहा है। सूत्र संकेत करते हैं कि चीन पीओके में अपने सैन्य ठिकाने बना रहा है।

हालात यहां तक बिगड़ रहे हैं कि भारत की समुद्री सीमा पर चीन जबरिया काबिज हो गया है। पाक–अधिकृत कश्मीर जब आधिकारिक रूपेण पाक–चीन का ट्रांजिट रूट (रास्ता) बन जाएगा तब तो शायद हम कुछ भी नहीं कर पाएंगे। परन्तु केन्द्र सरकार मुस्लिम वोटों की मृगतृष्णा में आतंकवादियों /अलगाववादियों की हस्तक सी बनी हुई है और सेना के हाथ–पांव बांधकर उन्हें दुश्मन के हाथों हलाल कराने पर तुली हुई है।

जनता यदि नहीं जागी तो देश भयानक संकट में फंस जाएगा क्योंकि दुश्मन चुस्त; कांग्रेसनीत संप्रग सरकार मस्त, विपक्षी दल सुस्त व सेना पस्त जैसी नजर आ रही है। (4–5 सितम्बर)

हिन्दीभाषी राज्यों में पैठ बढ़ाने के लिए मिशनरियों का नया फण्डा

भोपाल (समा0एजें0)। आर्कबिशप से लेकर पादरी और मिशनरी स्कूलों के प्रिन्सिपल तक अब हिन्दी की क्लास अटेण्ड करेंगे। साथ ही आंचलिक भाषा का भी ज्ञान होना अनिवार्य होगा। इलाहाबाद में कैथोलिक हिन्दी साहित्य समिति की बैठक में ये फैसले लिए गए।

जानकारी के अनुसार राज्य के तमाम चर्चों के फादर और ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों के गैर हिन्दीभाषी प्रिन्सिपलों के लिए हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य कर दिया गया है। हिन्दी सीखने के लिए दो माह की क्लास लगाई जायेगी जिसमें हिन्दी की व्यवहारिक शिक्षा दी जायेगी। यही नहीं दूरस्थ अंचलों में स्थित चर्च और स्कूलों के क्रमशः फादर व प्रिन्सिपलों को क्षेत्रीय भाषा का कामचलाऊ ज्ञान भी लेना होगा।

(म0प्र0) राज्य में कैथोलिक चर्च के प्रवक्ता फादर आनंद मुदुगल ने बताया कि बैठक में मध्यप्रदेश समेत अन्य हिन्दीभाषी प्रदेशों के लिए कार्ययोजना तैयार की गई है जिसके मुताबिक कैथोलिक चर्च की पूजा पद्धति को भी हिन्दीभाषा में तैयार किया जायेगा तथा हिन्दी के बड़े लेखकों और उनके महत्वपूर्ण योगदान पर संगोष्ठी जैसे आयोजन होंगे। भोपाल में हिन्दी सिखाने के लिए पास्टल सेण्टर में क्लास भी शुरु हो गई है।

भारत माता की जय बोलने पर पिटाई; फादर के विरुद्ध मुकदमा दर्ज

भाण्डेर, 17 अगस्त। भाण्डेर में नया जीवन मिशन स्कूल में पढ़ रहे छात्र योगेश पाठक, पुत्र दिनेश पाठक, प्रियांशु मिश्रा पुत्र गिरीशचन्द्र मिश्रा, अमन रावत पुत्र राजेन्द्र रावत को इस बात की सजा मिली कि उन्होंने राष्ट्रगान के बाद भारत माता की जय बोली। छात्रों की शिकायत पर 'फादर' के खिलाफ धारा 323 और 506 बी के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है।

(स्वदेश, दतिया–मध्य प्रदेश)

अनुसूचित जनजातीय छात्रों को शिक्षा से वंचित करने का राजस्थान सरकार का कुचक्र; विरोध में उतरे छात्र

डूंगरपुर, 2 अगस्त। ग्रामीण अंचलों में संचालित छोटे निजी विद्यालयों को मान्यता के नाम पर भारी भरकम राशि अदा करने की बाध्यता के विरोध में जनजाति शिक्षा बचाओ समिति उपयोजना क्षेत्र के निर्धन विद्यार्थियों ने जिला मुख्यालय पर रैली निकाली और कलेक्ट्रेट पर धरना देकर सरकार से जनजाति उपयोजना क्षेत्र के विद्यालयों के लिए तय शिक्षा नियमों में शिथिलता दिए जाने की मांग की।

कलेक्ट्रेट पर धरने में मौजूद विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए विहिप के केन्द्रीय सहमंत्री एवं जनजाति शिक्षा प्रचार समिति के संरक्षक रामस्वरूप महाराज ने प्रदेश सरकार द्वारा निजी विद्यालयों को मान्यता के नाम पर इकसठ हजार रूपए का अनावश्यक बोझ डाले जाने के निर्णय का पुरजोर विरोध करते हुए कहा कि जनजाति उपयोजना क्षेत्र में कई ऐसे छोटे–छोटे निजी विद्यालय संचालित हैं जो इस क्षेत्र के निर्धन विद्यार्थियों को अत्यल्प फीस पर गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा मुहैया करा रहे हैं। इन विद्यालयों को सरकार से कोई सहायता प्राप्त नहीं हो रही हैं और बहुत कम शुल्क लिए जाने से जैसे–तैसे विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है, ऐसे में मान्यता के नाम पर इतनी बड़ी राशि का प्रबंध करना उन विद्यालयों के लिए कैसे संभव हो सकता हैं जो सेवा के रूप में निर्धन बच्चों को शिक्षा मुहैया कराने का प्रयास कर रहे हैं।

रामस्वरूप महाराज ने कहा कि एक ओर तो सरकार अनिवार्य शिक्षा के तहत बालक–बालिकाओं को सहज शिक्षा सुलभ कराने की बात कर रही है। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण अंचलों में चलने वाले छोटे–छोटे विद्यालयों की मान्यता अनिवार्य करने व कठोर नियम बना रही है, जिससे अधिकांश विद्यालय बंद होने के कगार पर पहुंच गए हैं।

उन्होंने शिक्षा संकुल बीकानेर को देय प्रति विद्यालय मान्यता हेतु 50 हजार रूपए की सावधि जमा राशि से मुक्त रखने, मान्यता शुल्क को 10 हजार से घटाकर 2 हजार करने, मान्यता के लिए जमीन का पट्टा, भवन व खेल मैदान हेतु पर्याप्त भूमि, अध्यापन हेतु प्रशिक्षित अध्यापकों की अनिवार्यता जैसी शर्तों में शिथिलीकरण करने, जनजाति क्षेत्र के सभी निजी विद्यालयों में कक्षा 6 से 12 तक के जनजाति विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दिए, जाने सरकारी आवासों के अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को भी निजी विद्यालयों में पढ़ने की अनुमति देने तथा जनजाति उपयोजना क्षेत्र में चलने वाले सभी निजी विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें मुहैया कराने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए सरकार से आग्रह किया कि वह जनजाति उपयोजना क्षेत्र में शिक्षा नियमों को शिथिल करते हुए इस क्षेत्र के निर्धन विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करे।

इससे पूर्व भारतीय जनसेवा प्रतिष्ठान द्वारा संचालित जनजाति क्षेत्र के विद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने दोपहर में लक्ष्मण मैदान में एक रैली निकाली जो शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए कलेक्ट्रेट पहुंच कर धरने में परिवर्तित हो गई। जनजाति शिक्षा बचाओ समिति के पदाधिकारियों ने कार्यवाहक कलेक्ट्रेट नरेन्द्र कोठारी को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन भी सौंपा।

वृहत्तर नगालैण्ड की मुहिम को अन्तिम परिणति तक पहुंचाने में जुटे मिशनरी !

'हिन्दू विश्व पाक्षिक' के माध्यम से पांचों जगद्गुरु शंकराचार्यों और सभी महामण्डलेश्वरों आदि से निवेदन

वनवासी कल्याण आश्रम, विश्व हिन्दू परिषद तथा उत्तर पूर्वांचल जनजाति सेवा समिति आदि द्वारा पिछले 40 वर्षों से गैर ईसाइयों को उनके पूर्वजों की पारम्परिक समाज में बनाए रखने का यानी हिन्दू समाज से जोड़ने का प्रयास चल रहा है लेकिन यह काम लगभग साठ वर्ग किलोमीटर जैसे विशाल झील में मुट्ठीभर नमक डालने जैसा है। जबकि ईसाई मिशनरियां हर वर्ष कई टन नमक डालकर हिन्दू समाजरूपी झील को पाट देती हैं।

उनका पहला प्रयास शुरु हो गया है कि मिजोरम (80/90 प्रतिशत) ईसाइयों को मणिपुर के चुड़ाचांदपुर, चांडेल, उखल से नागालैण्ड को जोड़ना इसी के साथ तमेलों–सेनापति जिलों के रास्ते से भी नगालैण्ड को जोड़ना। इन जिलों में हिन्दू संगठन का कार्य चल रहा है मगर वह ऊंट के मुंह में जीरा रखने के बराबर है। इसी के साथ मिशनरी नार्थ काछार हिल्स जिले को डिमाहसा (काछारी) गिरि–वनवासी गरीबों को धन पर धन देकर ईसाई बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

उत्तर पूर्वांचल में किसी भी बड़े धर्मगुरु के प्रवेश को रोका जा रहा है। अतः छोटे स्तर के धर्म–समाज सेवकों को भेजने की ओर ध्यान दिया जाय तथा **स्थानीय युवकों–युवतियों को हिन्दू पूर्णकालिक बनाने के साथ बी0ए0/एम0ए0 कराकर उन्हें हर माह 5/6 हजार रुपये देकर काम में लगाया जाना चाहिए। एक/दो हजार देकर ऐसे युवकों से काम कराना सफलता देने के बजाय दिनोंदिन हिन्दू समाज को घटा रहा है।** अगर हर हिन्दू एक रुपया और एक रोटी के हिसाब से दे तो भी जो हिन्दू हैं वे हिन्दू बने रहेंगे अन्यथा नगालैण्ड को मेघालय से ईसाई जोड़ देंगे। सूत्रों के अनुसार अरुणाचल के उत्तर पूर्वी भाग में ईसाईकरण पर हर महीने कम से कम एक करोड़ रुपया लगा रहा है।

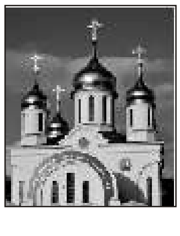

पूर्वी पाकिस्तान बनने के साथ–साथ पूर्वी भाग चट्टग्राम अंचल के चकमा और रियांग जातियों को जो बौद्ध हैं, उन्हें भगाया जाने का कार्यक्रम बनाया था। उन्हें अरुणाचल में ले जाकर बसाया गया परन्तु आश्चर्य की बात है कि वे ईसाई बनते जा रहे हैं। अब बांग्लादेश में बचे चकमाओं और रियांगों को बम, बंदूकें दे रहे हैं और ईसाई बना रहे हैं। इस कूटनीति को यदि हिन्दू समाज समझे तो समीचीन होगा।

डॉ0 आचार्य राधागोविन्द थोंगम 'भारतबन्धु',
सम्पादक–मणिकुसुम (त्रैमासिक), उरिपोक वाचस्पति
लैकाइ, इम्फाल–795 004 (मणिपुर राज्य)

जोगिन्दर सिंह

भारत पर नि:शब्द आक्रमण

बांग्लादेश और पाकिस्तान से होने वाला अवैध आव्रजन हमारी आन्तरिक सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन गया है। किन्तु वोट बैंक की राजनीति में उलझे हमारे राजनेता इस खतरे के प्रति गंभीर नहीं हैं।

हमारी अन्तरराष्ट्रीय सीमा करीब 15,318 किमी है, जिसमें से करीब 4000 किमी सीमा सिर्फ बांग्लादेश से लगती है। यह पश्चिमी बंगाल, असम, मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा से सटी हुई है। यह भारत सरकार की जिम्मेदारी है कि वह देश की अन्तरराष्ट्रीय सीमा की सुरक्षा करे तथा अवैध तरीके से घुसने वाले विदेशी नागरिकों को रोके तथा वैध दस्तावेजों के साथ देश में आने वाले विदेशी नागरिकों की संख्या को नियंत्रित करे। किन्तु सरकार इस जिम्मेदारी को निभाने में असफल रही है। केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री के ताजा बयान से तो ऐसा ही लगता है। अपने बयान में उन्होंने कहा, ''30 जून, 2011 तक उपलब्ध जानकारी के अनुसार 1,283 पाकिस्तानी नागरिक; जिन्होने भारत में वैध दस्तावेजों के साथ प्रवेश किया, या तो गायब हैं अथवा उनका कुछ अता–पता नहीं हैं।''

एक महीने पूर्व सूचना अधिकार के तहत जानकारी देते हुए सरकार ने कहा कि, ''वैध दस्तावेजों के बिना भारत में प्रवेश करने वाले पाकिस्तानी और बांग्लादेशी नागरिकों की सही जानकारी का अनुमान लगाना बहुत मुश्किल है क्योंकि ऐसे सभी लोग चोरी–छुपे ही आते हैं।'' उसी जवाब में सरकार ने बताया कि करीब 73000 विदेशी नागरिक वैध वीजा दस्तावेजों की अवधि समाप्त हो जाने के बाद भी भारत में ही रुके हुए हैं। इनमें से करीब 50 प्रतिशत बांग्लादेशी नागरिक हैं और 10 प्रतिशत पाकिस्तानी नागरिक हैं। यह जानकारी 31 दिसम्बर, 2009 तक की है। 1996 में तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री इन्द्रजीत गुप्ता ने संसद को सूचित किया था कि करीब ढाई लाख बांग्लादेशी नागरिक अवैध तरीके से भारत में रह रहे हैं।

विचलित कर देने वाली बात यह है कि सीमा पार आतंकवाद देश की सुरक्षा के लिए बहुत बड़े खतरे के रूप में उभरने के बावजूद गृह मंत्रालय अभी तक अवैध तरीके से भारत में घुसने वाले बांग्लादेशी और पाकिस्तानी नागरिकों के संबंध में कोई केन्द्रीयकृत जानकारी का रिकार्ड तैयार नहीं कर रहा है। जहां इसे राजनीतिक फायदा हो रहा हो, वहां तो न्यायालय के आदेशों का उल्लंघन करने में भी कांग्रेस सरकार पीछे नहीं रहती। वर्ष 2005 में उच्चतम न्यायालय ने आईएमडीटी एक्ट, 1983 के प्रावधान को संविधान के विरुद्ध बताते हुए निरस्त कर दिया था। इसी प्रकार 1984 में बने आईएमडीटी नियमों को भी संविधान के विरुद्ध बताते हुए न्यायालय ने उन्हें भी निरस्त कर दिया था। ये कानून कांग्रेस सरकार ने अपने राजनीतिक हितों के लिए बनाये थे और बाद में सरकार ने न्यायालय के आदेशों को ठेंगा दिखाते हुए पिछले दरवाजे से ऐसे ही कानूनों को लागू करने का प्रयास भी किया था।

आन्तरिक सुरक्षा के सबंध में आयोजित सभी उच्च स्तरीय बैठकों में अवैध आव्रजन का मुद्दा हमेशा उठता रहा है। पिछले दिनों आन्तरिक सुरक्षा के मुद्दे पर नई दिल्ली में आयोजित मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में भी यह मुद्दा प्रमुखता से उठा। उस सम्मेलन में इस मुद्दे पर उत्तर पूर्वांचल के राज्यों के आपसी मतभेद भी उभरकर सामने आ गये। खासतौर से कुछ राज्यों ने असम पर आरोप लगाया कि वह पूरे पूर्वांचल क्षेत्र में अवैध घुसपैठ को बढ़ावा दे रहा है।

उस सम्मेलन में नगालैंड के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने खुलकर असम पर आरोप लगाया कि वह बांग्लादेश से पूरे क्षेत्र में घुसने वाले अवैध बंगलादेशी नागरिकों की घुसपैठ को रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठा रहा है। सम्मेलन में बोलते हुए उन्होंने कहा, ''इस समय असम ऐसा राज्य बन चुका है जहां अवैध घुसपैठ को खुलेआम बढ़ावा दिया जाता है। इस राज्य में अवैध घुसपैठिये आसानी से राशन कार्ड तथा अन्य भारतीय दस्तावेज बनवा लेते हैं। इन्हीं दस्तावेजों के सहारे वे पूर्वांचल के अन्य राज्यों में बेधड़क प्रवेश करते हैं। यह बहुत ही खतरनाक काम हो रहा है जो पूरे क्षेत्र की सुरक्षा को संकट में डाल रहा है।'' उन्होंने यह भी आरोप लगाया था कि इन अवैध घुसपैठियों को ऐसी भूमि पर बसाया जा रहा है जिस पर असम तथा दूसरे राज्यों के बीच विवाद है। उन्होंने असम सरकार से निवेदन किया कि चूंकि वह इस क्षेत्र का सबसे बड़ा राज्य है इसलिए उसी भावना को ध्यान में रखते हुए वह मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड और मणिपुर के साथ चले रहे अपने सीमा विवाद को शीघ्रातिशीघ्र निबटाए।

असम के एक पूर्व राज्यपाल के अनुसार असम की 126 में से 57 विधानसभा सीटों पर वर्ष 1994 से 1997 के बीच मतदाताओं की संख्या में 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गयी। जबकि शेष भारत में यह वृद्धिदर औसतन 7.4 प्रतिशत थी। नाटकीय ढंग से हुई यह बढ़ोतरी इस बात का सीधा सबूत है कि इस क्षेत्र में अवैध बांग्लादेशी नागरिक बहुत अधिक संख्या में आकर बसे और उन्होंने आसानी से भारतीय दस्तावेज प्राप्त कर लिये। उन्होंने यह भी बताया कि 1979 में असम की मोंगोलदेयी संसदीय सीट पर मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण के दौरान जब हजारों बांग्लादेशी नागरिकों के नाम मतदाता सूची से हटा दिये गये थे तो उस समय वहां के एक समुदाय विशेष के लोगों ने इसे लेकर पूरे क्षेत्र में बगावत जैसी स्थिति पैदा कर दी थी।

उन पूर्व राज्यपाल महोदय ने यह भी बताया कि विषय की गंभीरता तथा इसके दूरगामी परिणाम की परवाह न करते हुए भारतीय मुसलमान बांग्लादेशी नागरिकों के प्रति अत्यधिक सहानुभूति

शेष पृष्ठ 8 पर

"वास्तव में राजनीति आज हमारे देश में 'राजनीतिक स्वार्थपूर्ति' के हाथों बंधक बन गयी है जिसे 'सिद्धांत' का नाम दिया जाता है और इन सिद्धांतों में अवसर तथा सुविधानुसार परिवर्तन करने में किसी को कभी गुरेज नहीं होता।"

सावधान !! आयोडीनयुक्त नमक : स्वास्थ्य के लिए घातक!

समस्त हिन्दू धर्मावलम्बी विगत हजारों वर्षों से अपने उपवास के दिनों में सैंधा नमक प्रयोग करते चले आ रहे हैं, क्योंकि यह शुद्ध शाकाहारी माना जाता है। इसके अतिरिक्त सामान्य प्रयोग में भी सैन्धव के साथ–साथ सौवर्चल लवण, विड़ लवण, समुद्र लवण, कृष्ण लवण (काला नमक), सांभर लवण आदि प्रयोग होते रहे हैं। परन्तु अंग्रेजों के आने के पश्चात् सामान्य समुद्र लवण का प्रयोग भारत में ज्यादा होने लगा। फिर महात्मा गांधी ने दाण्डी यात्रा निकालकर नमक कानून तोड़कर उसे सर्वव्यापी बना दिया। परन्तु विगत 30 वर्षों से बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मकड़जाल में फंसकर भारत सरकार ने आयोडाइसाड नमक को बढ़ावा देते हुए इसे एक बहुमूल्य वस्तु बनवा डाला। इसके कारण पहले 25 पैसे प्रतिकिलो बिकने वाला सामान्य नमक आजकल 15 से 20 रुपये किलो बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा बेचा जा रहा है।

इस आयोडीन नमक के कई दुष्परिणाम विगत काफी समय से देखने को मिलने लगे हैं। इसके कारण स्त्री–पुरुष में वृद्धिमान प्रजनन विकारों के साथ ही–1. चर्म, श्वास व पाचन संस्थान की एलर्जी, 2. स्त्रियों में बढ़ते श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया), गर्भाशय में फाइब्रोमा (गाठें), 3. हार्मोन्स असंतुलन के कारण यौवनपीड़िकायें, 4. गंजापन आदि हो रहे हैं। इन सभी बीमारियों का संबंध आयोडाइज्ड साल्ट से है क्योंकि आयोडीन नमक में मिलाये जानेवाले पोटेशियम आयोडेट एवं डला बनने (जमने) से रोकने वाला पदार्थ ई–536 दोनों ही अधिक मात्रा में शरीर के लिए नुकसानदायक रसायन हैं। इनसे एलर्जी भी काफी मात्रा में देखने को मिलती है।

एलोपैथी (आधुनिक चिकित्सा) के अनुसार आयोडीन की अधिक मात्रा एवं साइडइफैक्ट से–होठों, पलकों, गले में सूजन, बुखार, जोड़ों में दर्द, गाठों का फूलना, सिरदर्द, खुजली, शरीर में विभिन्न झिल्लयों की सूजन, जुकाम (नजला) तथा थोम्बोसाइटोपीनिया (खून में प्लेटलेट्स कम हो जाना) आदि लक्षण मिल सकते हैं। विगत कुछ समय से उत्तर भारत के कुछ क्षेत्र तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में डेंगू, मलेरिया, वायरल बुखार के अत्यधिक प्रकोप के कारण प्लेटनेट्स कम हो जाने से कई रोगी मृत्यु के समीप भी पहुंच चुके हैं। इससे समझ सकते हैं कि यह कृत्रिम आयोडाइज्ड नमक कितना खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

ज्ञात हो कि यह कृत्रिम आयोडाइज्ड नमक समुद्र के खारे पानी से बनाया जाता है जो अनेक जीवित एवं मृत जानवरों का वास है तो फिर इसे शुद्ध शाकाहारी कैसे समझा जा सकता है, **जबकि बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने आयोडाइज्ड नमक पैकेट पर हरा बिन्दीदार शाकाहारी चिह्न छाप रही हैं जो एक धोखा है। इसलिए इस आयोडाइज्ड नमक पर गैरशाकाहारी (मांसाहारी) लाल रंग का चिह्न (रेड डाट) लगाया जाना चाहिए।**

इसके विपरीत सैन्धव लवण को हजारों वर्षों से हिन्दू भोजन परंपरा तथा व्रत–पूजा में प्रयोग किया जाता रहा है। यह सैन्धव नमक चट्टानों से प्राप्त किया जाता है तथा आश्चर्यजनक रूप से इसमें नमक के साथ–साथ जो अन्य कई लवण आदि पाए जाते हैं उनका रासायनिक संघटन/संरचना उसी प्रतिशत में मिलती है जिस प्रतिशत में वे मनुष्य के शरीर में मिलते हैं। इसमें आयोडीन मैग्नीशियम, पोटेशियम, सोडियम आदि भरपूर मात्रा में मिलते हैं। साधारण आयोडाइज्ड नमक के विपरीत सैंधा नमक हृदय रोगियों व एलर्जी के रोगियों के लिए लाभकारी माना गया है। प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रन्थ अष्टांग संग्रह के वर्णित सूत्र स्थान के अनुसार––

''सैन्धवं तत्र सस्वादु वृष्यं
हृद्यं त्रियोषनुयत्।
लध्वनुष्णं दृशः
पथ्यमविदास्यग्निदीपनम्।।''
(अ.सं.मू. १२/३१)

अर्थात् सैन्धव लवण किंचित मधुर, वृष्य, हृद्य (हृदय के लिए लाभकारी), त्रिदोषनाशक, लघु, किंचित उष्णवीर्य, नेत्रों के लिए पथ्य, अविदाही और अग्निदीपक (भूख को बढ़ाने वाला) होता है। जबकि इसी ग्रन्थ के अनुसार –''सामान्य (समुद्र से प्राप्त) नमक विपाक में मधुर, गुरु तथा कफवर्धक होता हैः–

विपाके स्वादु सामुद्रं गुरु
श्लेष्मविवर्धनम्।'' (अ.सं.सू. १२/३४)

हृदय की मांसपेशियां पोटेशियम से अधिक पोषण प्राप्त करती हैं तथा इसी के कारण अच्छा कार्य कर सकती हैं। यह पौटेशियम सैन्धव नमक में ही भरपूर पाया जाता है, जबकि साधारण आयोडाइज्ड नमक में बिलकुल नहीं होता। इसमें केवल सोडियम क्लोराइड (Nacl) होता है, जो स्वयं हृदयरोगियों व ब्लडप्रेशर रोगियों के लिए खतरनाक माना जाता है। इसीलिए हृदयरोगियों को साधारण आयोडाइज्ड नमक की जगह कृत्रिम लोना नमक (कम सोडियम वाला) प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। जबकि साधारण सस्ता सैन्धव नमक इसका सर्वश्रेष्ठ विकल्प है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा विगत काफी वर्षों से किया जा रहा आयोडीन युक्त नमक का भ्रामक प्रचार–प्रसार कुछ लोगों की समझ में आने लगा था; परन्तु विदेशी मानसिकता की गुलाम सरकारें इसे समझने को तैयार नहीं हैं। इसी अपनी संस्कृतिविहीन मानसिकता के कारण आयुर्वेद में वर्णित सैकड़ों औषधियों और पदार्थों को विदेशी कंपनियां निरंतर पेटेण्ट करा रही हैं। पांच रूपये किलो के आलू के चिप्स एक हजार रुपये किलो में कंपनियां बेच रही हैं। यही हाल नेटवर्किंग सिस्टम के द्वारा बेचे जा रहे आयुर्वेदिक औषधियों का भी है।

अतः आधुनिकता और विज्ञापनबाजी के इस लूट–खसोट युग में हजारों वर्ष पुराने सैंधा नमक–प्रयोग जैसे अनेक हिन्दू संस्कारों को समझने व समझाने की आवश्यकता है। जिससे पाश्चात्यसंस्कृति जनित अनेक मानसिक व शारीरिक व्याधियों से बचा जा सके।

प्रस्तुति : डॉ0 सुशील गुप्त
बी0ए0एम0एस0 शालीमार गार्डन
कालोनी, बेहट बस स्टैण्ड,
सहारनपुर (उ0प्र0)

हरिकृष्ण निगम

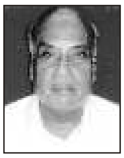

राष्ट्रगान से 'सिन्ध' हटाने की माँग; भारतीय संस्कृति पर पाद प्रहार !

मुम्बई उच्च न्यायालय ने कहा कि हमारे राष्ट्रगीत 'जन गण मन......' में 'सिन्ध' शब्द का प्रयोग सम्भवतः एक त्रुटि है और यद्यपि यह अनायास या अनजाने में हुई है पर उसे सम्बद्ध केन्द्रीय मंत्रालयों द्वारा सार्वजनिक उपयोग के लिए सुधारना चाहिए। उच्च न्यायालय की एक खण्डपीठ में न्यायमूर्ति रंजना देसाई और न्यायमूर्ति आर0जी0 केतकर ने पुणे के श्रीकांत मानुश्ते की एक जनहित याचिका पर कहा कि राष्ट्रगान में प्रयुक्त 'सिन्ध' शब्द को बदलकर 'सिन्धु' कर देना चाहिए क्योंकि 'सिन्ध' विभाजन के बाद भारत का हिस्सा नहीं रहा है। यह सुझाव उन्होंने केन्द्रीय गृहमंत्रालय, सूचना और प्रसारण व संस्कृति मंत्रालय के विचारार्थ भेजा।

विचारणीय है कि क्या हमारी संविधान निर्मात्री सभा और संविधान के अंतिम प्रारूप के सर्जक डॉ0 बाबा साहब अम्बेदकर की नजर से यह 'त्रुटि' बच निकली थी अथवा वे राष्ट्रगान में अन्तर्निहित हर शब्द के मन्तव्य से अनभिज्ञ थे ? शायद नहीं ! क्या राष्ट्रगान में देश के विशाल मानचित्र के सभी प्रदेशों या क्षेत्रों के नामों को सूचीबद्ध करना कोई बाध्यता या अनिवार्यता थी ? इस तर्क से क्या कश्मीर या बाद में उ0पूर्व के अरुणाचल या सिक्किम आदि सीमान्त प्रदेश भी समय–समय पर समाविष्ट होने चाहिए थे ?

बहुत से लोगों का मत है कि 'सिन्ध' शब्द को 'सिन्धु' से बदलने का विचार ही राष्ट्रद्रोह का परिचायक है। इसके पहले भी सन 2005 में संजीव भटनागर ने सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की थी जिसमें 'सिन्ध' भारतीय प्रदेश न होने के आधार पर 'जन–गण–मन' से निकालने की मांग की थी जिसे देश में व्यापक रूप से अराष्ट्रीय माना गया था। इस याचिका को 13 मई, 2005 को सर्वोच्च न्यायालय की आर0सी0लाखोटी की अध्यक्षता वाले खण्डपीठ ने सिर्फ खारिज ही नहीं किया था बल्कि संजीव भटनागर की याचिका को छिछली और बचकानी मुकदमेबाजी मानते हुए उस पर रुपये 10,000/– का आर्थिक दण्ड भी लगाया था।

जहां तक पुणे के सेवानिवृत्त प्रोफेसर श्रीकान्त मालुश्ते की 9 अगस्त, 2011 को दायर की गई इसी विषय की याचिका का प्रश्न है आज इस प्रश्न को फिर उछालकर राजनीतिक विवाद खड़े करने का मन्तव्य मात्र देश की प्रभुसत्ता पर येन–केन प्रकारेण संशय प्रकट करने के अलावा क्या कुछ और हो सकता है ?पिछले 64 वर्षों से 'कश्मीर' जो समस्त भारत का 'सिरमौर' है, उसे जुड़वाने के लिए आज तक किसी तार्किक और वैधता के प्रश्न पर किसी कथित संवेदनशील बुद्धिजीवी को अब तक यह क्यों नहीं सूझा ? दूसरी ओर 'सिन्ध' जो हमारी राष्ट्र की संस्कृति से गत 5000 वर्षों से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा है, उस पर संशय प्रकट किया जा रहा है।

एक समय समस्त भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं दूर सुदूर तक सारे दक्षिणपूर्व एशिया के देशों में भारतीय संस्कृति व सभ्यता के प्राण बसते थे जिसे ब्रिटिश शासन की प्रशासनिक इकाइयों में उन्होंने स्वयं पिरोया था। श्रीलंका, बर्मा, पूर्वोत्तर व पश्चिमोत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों यद्यपि उन्होंने पहले ही छोड़ दिए थे पर भारत उन्हें नहीं भूल सकता है। देश विभाजन के बाद सिन्धी अपने ही देश में पराए हो गए थे। रेडक्लिफ एवार्ड के परिणामों पर कांग्रेसी नेताओं ने उस समय कभी गंभीरता से नहीं सोचा था और उसका परिणाम हम आज तक भुगत रहे हैं। 1947 में आचार्य कृपलानी जो सिन्धी थे, कांग्रेस के अध्यक्ष थे। दूसरे बड़े नेता जैसे चोइथराम गिडवानी आदि नेहरू जी के मन्तव्य को कभी पूरी तरह नहीं समझ सके थे। जब गिडवानी ने इस पर खुलकर प्रतिरोध जताया तब संविधान निर्मात्री सभा ने सन् 1950 में उजड़े हुए सिन्धियों की सांस्कृतिक पहचान को बरकरार रखने के लिए राष्ट्रगीत में सिन्ध शब्द को बनाए रखने का निर्णय लिया था।

अपनी मातृभूमि को 64 वर्ष पहले खो देने के बाद आज इस नए भावनात्मक प्रतिघात पर प्रतिक्रिया स्वयं राम जेठमलानी के इस वक्तव्य से प्रकट होती है। यह याचिका मूर्खतापूर्ण, सतही और स्वप्रचार के लिए की गई है। क्योंकि सिंध एक भौगोलिक इकाई की परिधि से ऊपर रहा है। जहां के इतिहास और सभ्यता व संस्कृति का फैलाव आज भी 'जीए सिन्ध' आंदोलन के रूप में सीमा के उस पार भी है। पाकिस्तानी शासन इस आन्दोलन को सदैव शक से देखता रहा है। स्वातन्त्र्य–वीर सावरकर की कृति 'हिन्दुत्व' में सिन्धु, सप्तसिन्धु और सिन्धु सौवीर शीर्षक अध्याय में जो उन्होंने 1923 में लिखी थी, वह आज भी प्रासंगिक है।

सिन्धु घाटी की सभ्यता के क्षेत्र का विस्तार और उसकी नागरी संस्कृति, उसकी दशमलव प्रणाली, पंचाग पद्धति, मातृ एवं शक्तिपूजा का वर्णन मुस्लिम इतिहासकारों ने भी किया है। विद्रोही कवि शेख अयाज अब्दुल वाहिद आरेसर, अमर जलीन और इमदाद हुसैनी आदि ने बौद्धिक स्तर पर सदैव पाकिस्तान को चुनौती देकर अपने हिन्दू अतीत को भी स्वीकार किया है। डॉ0 नजम अब्बासी ने तो यह तक लिखा है कि अरब सागर नाम भी गलत है, उसे सिन्ध सागर कहना चाहिए क्योंकि सिन्ध का भू–भाग हिन्दुस्थान की धरती से जुड़ा है। पाकिस्तान ने सिन्ध की स्वाधीनता की बलि अपनी महत्वाकांक्षा के कारण चढ़ा दी थी।

पाकिस्तानी के विद्रोही लेखक, चिन्तक एवं 'जीए सिन्ध' आंदोलन के प्रवर्तक अब्दुल वाहिद आरेसर जो पाकिस्तानी जेल में दशकों तक रहे, लिखते हैं––''हम 55 वर्षों से पाकिस्तानी और 15 हजार वर्षों से सिन्धी है। हम पाकिस्तानी नहीं थे; पर

शेष पृष्ठ 8 पर

"अरब सागर नाम भी गलत है, उसे सिन्ध सागर कहना चाहिए क्योंकि सिन्ध का भू-भाग हिन्दुस्थान की धरती से जुड़ा है।"

पृष्ठ 5 का शेषांश

व्यक्त करते रहे हैं। यही कारण है कि ये बांग्लादेशी घुसपैठिये अब देश के राजनीतिक मामलों में काफी हद तक हस्तक्षेप करने की ताकत रखते हैं। उदाहरण के लिए पिछले दिनों जब महाराष्ट्र सरकार ने कुछ बांग्लादेश नागरिकों को वापस बांग्लादेशी भेजने का अभियान आरंभ किया तो कुछ राजनीतिक दलों ने उसका विरोध किया था। वह सारा विरोध कुल मिलाकर राजनीतिक स्वार्थपूर्ति के लिए किया गया था।

चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों द्वारा मतदाताओं को लुभाने के लिए बांटी जाने वाली रेवड़ियों तथा अवैध मतदाताओं द्वारा वोट देने की पद्धति में सीधा सम्बंध है। इस गठजोड़ के कारण ही विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रकार की समस्याएं पैदा होती हैं। खासतौर से जब भी अवैध नागरिकों की पहचान का मामला उठता है तो यह गठजोड़ उन सभी प्रयासों को सफल नहीं होने देता। इससे इस बात की संभावना भी बनी रहती है कि ये घुसपैठिये ही आगे चलकर आतंकी संगठनों की पनाहगाह बन जाते हैं और भारत में विभिन्न आतंकी गतिविधियों में आतंकी संगठनों की मदद करते हैं।

सच्चाई यह है कि इस समस्या की गहरायी को समझते हुए भी सभी राजनीतिक दल चुनावों में उनके वोट बटोरने के उद्देश्य से इन सभी खतरों को नजरअंदाज करते हैं। वास्तव में राजनीति आज हमारे देश में 'राजनीतिक स्वार्थपूर्ति' के हाथों बंधक बन गयी है जिसे 'सिद्धांत' का नाम दिया जाता है और इन सिद्धांतों में अवसर तथा सुविधानुसार परिवर्तन करने में किसी को कभी गुरेज नहीं होता।

समस्या यह है कि विश्वभर में सभी राजनेता एक जैसे हैं। वे चुनाव जीतने के लिए कुछ भी बयान देने में संकोच नहीं करते। वे यह मानकर चलते हैं कि बाद में उन्हें कोई कुछ नहीं पूछेगा क्योंकि लोगों की याद्दाश्त बहुत छोटी होती है और वे चुनाव के समय किये गये वायदों को अक्सर भूल जाते हैं। इसलिए हम सभी मतदाता जो वोट डालते हैं अथवा वे भी जो वोट नहीं डालते हैं, इन गंदे राजनेताओं को सत्ता में लाने के लिए जिम्मेदार हैं। इसलिए अब समय आ गया है कि उन सभी लोगों को जो वोट नहीं डालते हैं बताया जाए कि उन्हें चुनाव जीतने वाले राजनेताओं की गुणवत्ता को लेकर शिकायत करने का अधिकार नहीं है।

पिछले दिनों एक वरिष्ठ नेता, जो लोकसभा के अध्यक्ष भी रहे, ने बार–बार कहा कि उत्तर पूर्वांचल में रह रहे अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों सहित सभी निवासियों को पहचान पत्र जारी किये जाएं। अरुणाचल प्रदेश और पश्चिम बंगाल के एक पूर्व राज्यपाल ने बताया कि कम से कम पचास लाख बांग्लादेशी नागरिक अवैध तरीके से भारत में प्रवेश करने के बाद असम में स्थायी तौर पर रहने लगे हैं। वे राज्य की कुल जनसंख्या का एक चौथाई यानि करीब 22 प्रतिशत हैं। केन्द्रीय गृह मंत्रालय तथा खुफिया ब्यूरो द्वारा लगाये गए एक अनुमान के अनुसार भी असम में बांग्लादेशी घुसपैठियों की संख्या करीब चालीस लाख है।

ये आंकड़े मात्र अवैध घुसपैठ की गंभीरता की तरफ ही इशारा नहीं करते, बल्कि इनके कारण देश की सुरक्षा को कितना बड़ा खतरा पैदा हो रहा है उसकी तरफ भी साफ इशारा करते हैं। इसके अलावा इन लोगों के कारण वास्तविक भारतीय नागरिकों के समक्ष रोजगार आदि की जो समस्याएं पैदा होती हैं। वे अलग हैं। अमेरिका सहित सभी पश्चिमी देश अपने नागरिकों के रोजगार अवसरों को पूरी तरह संरक्षण प्रदान करती हैं। किन्तु हमारी सरकार अपनी यह जिम्मेदारी निभाने की बजाए इस संबंध में हमेशा असहाय ही दिखती है।

मैकियावली, हॉब्स तथा अन्य विचारकों ने मनुष्य को ऐसे पिंड के रूप में परिभाषित किया है जिसकी सबसे बड़ी ताकत उसकी 'स्वयं परस्पर निर्भता' होती है। इसका अभिप्राय यह है कि अवैध घुसपैठ का मसला सिर्फ क्षेत्र की भौगोलिक दशा को बदलने से जुड़ा हुआ नही है। यह 'पश्चाताप' का मसला भी नहीं है, जहां हम अपने स्वयं के हितों की रक्षा न कर सकें। एक बार आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री गॉग व्हाइटलम ने कहा था कि, ''बाजी लगाने वालों को पता है कि 'नैतिकता' नाम का घोड़ा मुश्किल से ही जीत पाता है, जबकि 'सेल्फ इंटरेस्ट वाला घोड़ा' हमेशा दौड़ में आगे रहता है। इसलिए सरकार को दोनों घोड़ों को पहचानकर ही आगे काम करना चाहिए। (22 अगस्त, 2011)

लेखक सी.बी.आई. के पूर्व निदेशक हैं

पृष्ठ 7 का शेषांश

सिन्धी थे, मुसलमान नहीं थे; पर सिन्धी थे। सिन्धी होने का प्रमाण पत्र हमें सिन्ध की धरती ने दिया है।'

हमें भूलना नहीं चाहिए संजीव भटनागर की 'सिन्ध' शब्द हटाने वाली जनहित याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय ने मई 2005 में निर्णय दिया था तब तक केन्द्रीय सरकार के शपथ पत्र के साथ–साथ दर्जनों विद्वानों और बुद्धिजीवियों ने एक मत से कहा था कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के इस राष्ट्रगान में किसी भी तरह का बदलाव अनुचित है और वह उनका अपमान भी है। यह गान सर्वप्रथम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में 27 दिसम्बर 1911 में गाया गया था। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भी इसी गीत को आजाद हिन्द फौज–आई0एन0ए0 के राष्ट्रगीत के रूप में थोड़े परिवर्तन से पहले ही स्वीकार किया था।

विश्ववंद्य कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की देश का गुणगान करनेवाली अमर रचना फिर मुकदमेबाजी का शिकार बनेगी, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। ....भूसांस्कृतिक श्रद्धा होती हैं। सिन्ध एक परम्परा है, सिन्ध हिन्द है, हिन्द सिन्ध है ! प्रश्न कई बार निर्णीत हो चुका है। फिर इस याचिका की सुनवाई का आज क्या मतलब बचा है ?

ए–1002, पंचशील हाईट्स, महावीर नगर,
कान्दिवली (प0), मुम्बई (महा0)

पहली बार लश्कर ने माना, कातिल उसके लोग

श्रीनगर, 26 अगस्त (ईएनएस)। लश्कर की जांच में उन लोगों के बारे में पहचान कर ली गई है जिन्होंने प्रमुख मजहबी नेता मौलाना शौकत अहमद शाह की हत्या के लिए योजना बनाई और बाद में इसे अंजाम दिया। चरमपंथी संगठन का कहना है कि **'मुमकिन है कि शाह को कत्ल करने का हुक्म और संदेश पाकिस्तान से भेजा गया होगा।'**

हुर्रियत कांफ्रेंस, जमायते–इस्लामी, जम्मू–कश्मीर लिबरेशन फ्रण्ट, जमायते–अहले हदीस और अन्य प्रमुख संगठनों की सर्वदलीय जांच समिति की ओर से जारी रपट में कहा गया है कि 'पहले हमारा ख्याल था कि भारतीय फौज और संगठनों ने हमारी तहरीक को कमजोर करने और गलतफहमी फैलाने के मकसद से मौलाना शौकत साहब को शहीद किया है। हमें बिलकुल अंदाज नहीं था कि कातिल हमारे बीच का होगा।'

लश्कर ने जिन आतंकवादियों को कसूरवार ठहराया है, वे हैं–जावेद मुंशी उर्फ बिल्ली पप्पा और उसका साथी निसार अहमद। इन्हें पुलिस गिरफ्तार कर चुकी है। इन पर हत्या का आरोप लगाया गया है।

गौरतलब है कि मौलाना शौकत की हत्या बीते आठ अप्रैल को एक विस्फोट में कर दी गई थी, जब वे जुमे की नमाज अदा करने के लिए मस्जिद में प्रवेश कर रहे थे। इसके बाद सर्वदलीय जांच समिति बनाई गई। इस घटना की सभी तबकों ने निंदा की थी। सभी धार्मिक संगठनों और अलगाववादियों ने इस घटना की जांच की मांग उठाई थी।

सुब्रमण्यन स्वामी को अपनी पैरवी खुद करने की अनुमति

नई दिल्ली, 26 अगस्त । जनता पार्टी प्रमुख सुब्रमण्यन स्वामी को दिल्ली की एक अदालत ने 2–जी स्पेक्ट्रम मामले में उनकी निजी शिकायत पर अपनी पैरवी खुद करने की अनुमति दे दी। अदालत ने उन्हें एक याचिका दायर करने के लिए भी समय दे दिया। इस याचिका में तत्कालीन वित्त मंत्री पी0 चिदम्बरम को आरोपी बनाने की मांग की गई है। इससे संबंधित मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है।

अदालत ने मामले की अगली

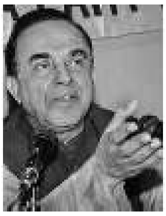

सुनवाई 15 सितंबर को तय की है। स्वामी ने पिछली सुनवाई में अदालत के सामने शिकायत की थी कि सीबीआई की ओर से दायर आरोप पत्र में चिदंबरम की भूमिका को शामिल नहीं किया गया है, जिन्होंने रेडियो किरणों के आबंटन पर 'संयुक्त तौर पर अहम फैसले' किए थे। उन्होंने यह भी आग्रह किया था कि उन्हें अपने मामले की पैरवी खुद करनेके लिए विशेष लोक अभियोजक नियुक्त किया जाए।

डॉ. स्वामी ने अदालत से कहा था कि 15 दिसम्बर, 2010 की उनकी निजी शिकायत का दायरा विस्तृत है और उसमें राष्ट्रीय सुरक्षा के पहलू को भी जोड़ा गया है, जिसकी सीबीआई ने जांच नहीं की है। उन्होंने आरोप लगाया कि सीबीआई के आरोप पत्र में पूरा दोष राजा पर डाला गया है, जबकि फैसले राजा और चिदम्बरम ने मिल कर किए थे। (एजेंसी)

पूर्वी दिल्ली में विहिप पदाधिकारी की हत्या से आक्रोष

नई दिल्ली, 24 अगस्त। स्थानीय विहिप पदाधिकारी श्री सुधीर सिंह को 22 अगस्त की रात्रि में कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा घर में घुसकर गोली मार दी गई थी। लहूलुहान सुधीर को अत्यन्त गंभीर हालत में पास के ही जीटीबी अस्पताल में दाखिल किया गया। आज उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया। घटना की जानकारी मिलते ही अस्पताल के बाहर विहिप के अनेक पदाधिकारी तथा शोकाकुल कार्यकर्ता एकत्र हो गये।

विहिप के प्रांत महामंत्री श्री सत्येन्द्र मोहन ने कहा कि यदि हत्यारों को अविलम्ब गिरफ्तार नहीं किया तो विहिप बजरंग–दल के कार्यकर्ता सड़कों पर उतरने को मजबूर होंगे। घटना के 44 घंटे बीत जाने के बावजूद किसी भी व्यक्ति को पुलिस ने गिरफ्तार नहीं किया है।

प्रस्तुति : विनोद बंसल

जन्म–दिवस–30 सितम्बर पर विशेष

'कलम आज उनकी जय बोल'

'कलम आज उनकी जय बोल,
जला अस्थियां बारी–बारी।

छिटकायीं जिनने चिनगारी।।
जो चढ़ गये पुण्य वेदी पर।

लिये बिना गरदन का मोल।
कलम आज उनकी जय बोल।।

अन्धा–चकाचौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बेचारा।
साक्षी हैं उनकी महिमा के,
सूर्य, चन्द्र, भूगोल, खगोल।
कलम आज उनकी जय बोल।।

राष्ट्रकवि
रामधारी सिंह 'दिनकर'

अग्निवेश की गिरफ्तारी का आदेश

हिसार (हरियाणा), 29 अगस्त। पवित्र अमरनाथ यात्रा पर टिप्पणी करके धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के मामले में अग्निवेश को 19 सितम्बर तक गिरफ्तार करने का आदेश दिया गया है। हांसी की स्थानीय अदालत ने को यह आदेश जारी किया। हरियाणा के हिसार में सामाजिक कार्यकर्ता प्रवीण तायल ने न्यायिक दण्डाधिकारी की अदालत में 23 मई को स्वामी अग्निवेश के खिलाफ याचिका दायर की थी। याचिका में कहा गया था कि अग्निवेश ने श्रद्धालुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाई। इस पर अदालत ने पुलिस को 29 अगस्त तक स्वामी को अदालत में पेश करने का आदेश दिया था।

(एजेन्सी)

पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने भी अग्निवेश की याचिका खारिज कर दी है। (एजेन्सी)

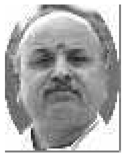

डॉ. प्रवीण तोगड़िया

इतना झुके कि घुटने टेक कर भारत तोड़ने पर आमादा ?

1971 में भारत ने सहयोग देकर बांग्लादेश को पाकिस्तान के चंगुल से मुक्त कराया, उस बांग्लादेश ने वहां के हिन्दुओं की क्या दुर्दशा की, वे सारी सत्य कहानियाँ सबको विदित है। वस्तुतः अखंड भारत में होने के नाते पाकिस्तान हो या बांग्लादेश, भारत ही थे। दुर्भाग्य से कुछ तत्कालीन नेताओं ने राजनीति कर और कुछ लोगों ने अनशन कर भारत के टुकड़े करा दिये। पाकिस्तान में सनातनी हिन्दुओं की, सिखों की बुरी स्थिति सभी जानते हैं; बांग्लादेश भी कुछ पीछे नहीं हिन्दुओं की कत्ल करने में! वहाँ से खदेड़े गए हिन्दू पश्चिम बंगाल, आसाम व अन्य भारतीय राज्यों में आज भी निर्वासित जीवन गुजार रहे हैं, जब कि वहाँ से जबरदस्ती भारत में घुसे जेहादी घुसपैठिए भारत के नागरिक के अधिकार पाकर मत भी डाल रहे हैं। इन जेहादियों ने आसाम में कई जिलों में पाकी और बांग्लादेशी हरे झंडे फहराए, हम सबने टी वी पर देखे हैं!

अब इतने से भी दिल नहीं भरा कि भारत की सरकार और आसाम की सरकार मतों के लिए झुक–झुक कर इतनी झुकी कि भारत की जमीन बांग्लादेश को देने जा रही है?जब मैं यह लिख रहा हूँ, तब भारत के अर्थविद् प्रधानमंत्री बांग्लादेश पहुंच भी गए हैं, अपना शाकाहारी खाना थोड़े समय के लिए त्याग कर बांग्लादेश की हिलसा मछली खाने की उनकी बातें मीडिया में चाव से दिखाई भी जा रही हैं! विषय हिलसा मछली नहीं! मछली के लिए झुकना या ना झुकना, यह किसी व्यक्ति का अपना निर्णय हो सकता है; किन्तु अपने देश की तकरीबन 600 एकड़ जमीन बांग्लादेश को बहाल करने की बातें छुप–छुप कर करना– क्या यह किसी का निजी मामला है?हर एक छोटे–छोटे विषय पर टेढ़े, चिढ़े हुए कटाक्ष करने वाली या अचानक बढ़ी हुई बारिश का भी दोष संघ पर और हिन्दुओं पर मढ़नेवाली उनकी 'पार्टी' इस विषय पर मौन है। यह 'केलकुलेटेड' मौन यही दर्शाता है कि दाल में जरूर कुछ काला है। (या, यूँ कहे कि मछली में राई कुछ ज्यादा ही है!)

आसाम के करीमगंज और ढुबरी इन 2 जिलों की कुल 600 एकड़ से अधिक जमीन बांग्लादेश को देने की पूरी तैयारी भारत सरकार ने की है! ऐसा कहा जाता है– इसी विषय में **4 सितम्बर को विश्व हिन्दू परिषद ने आसाम बन्द का आह्वान किया था** और भारत के सेकुलर कहे जाने वाले मीडिया तक ने स्वीकार किया कि यह बन्द सम्पूर्ण यशस्वी रहा! किसी भी राज्य में ऐसे बन्द तभी यश पाते हैं, जब उस राज्य की बहुसंख्य जनता उस विषय से, मन से, दिल से और प्रत्यक्ष जुड़ी हुई हो! और क्यों नहीं! आसाम के सीधे सादे लोग अब तक बहुत भुगत

चुके हैं! आये गए दिन जेहादी हमले झेलना कोई लड्डू खाने की (या मछली खाने की) बात नहीं। उसी बांग्लादेश से जुड़े हुजी जैसे जेहादी संगठन खुलेआम आसाम में हुए जेहादी हमलों की जिम्मेदारी लेते हैं; लेकिन फिर भी जेहादियों पर नियंत्रण लाने के लिए बांग्लादेश पर दबाव डालने की जगह उन्हें भारत की जमीन दी जा रही है?किससे पूछकर इतना बड़ा निर्णय लिया जिससे भारत का भूगोल बदलेगा?भूमि अधिग्रहण के लिए–जो केवल भारत के लिए सीमित है–भी भारत के चुने हुए जनप्रतिनिधियों द्वारा सम्मत किया हुआ कानून आवश्यक होता है, फिर भारत की 600 एकड़ से भी अधिक जमीन किसी और देश को देने के लिए किस कानून की आवश्यकता नहीं?भारत की जनता को इस विषय में क्यों नहीं विश्वास में लिया गया? दबाव आया तो लोकपाल बिल के लिए भी जनमत बातें होती है; भारत को फिर एक बार तोड़कर भूगोल बदलकर, आसाम की जनता से उनकी जमीन, उनका इतिहास छीनकर बांग्लादेश को देने में भारत की जनता को क्या पूछा गया खुलेमें?तेरी भी चूप और मेरी भी चूप?क्यों यह रेवड़ियां दी जा रही हैं बांग्लादेश को?जिताने के लिए मत देनेवाले घुसपैठी भेजें इसलिए?या और कुछ?

“ आसाम के करीमगंज और ढुबरी इन 2 जिलों की कुल 600 एकड़ से अधिक जमीन बांग्लादेश को देने की पूरी तैयारी भारत सरकार ने की है! ”

हमारी सरकार सबसे बात कर सकती हैं–कश्मीरी अलगाववादियों से, बांग्लादेश और आईएसआई के सहयोग से भारत पर हमले करने वाले उल्फा से और ना जाने किस–किस से। लेकिन हिन्दुओं से, भारतवासियों से विचार–विमर्श करने की आवश्यकता नहीं। इन्हें जो भारत की जमीन बांग्लादेश को दिए जा रहे हैं? कश्मीर से मार–मार कर खदेड़े गए पंडितों, सिखों को अभी तक उनकी खोयी जमीन, घर तो छोड़ ही दो, केवल एक सम्मान का जीवन और कश्मीर में मत और मालमत्ता के सम्पूर्ण अधिकार तक यह सरकार नहीं देती, आसाम के कार्बी आंगलॉन्ग वनवासियों को जेहादियों ने खदेड़कर निर्वासित बना दिया, अब तक 1 लक्ष से अधिक लोग निर्वासित कैम्प में सड़ रहे हैं; क्या उन्हें जमीन दी?इतनी बड़ी मेहरबानी बांग्लादेश पर क्यों जो भारत की जमीन तोड़कर दे रहे हैं?

आसाम नीलांचल का एक सुरम्य, सुन्दर प्रदेश है जहाँ हमारी देवी कामाख्या निवास करती हैं। तीस्ता नदी का जल–झुके बांग्लादेश के सामने! त्रिपुरा से अगवा कर बांग्लादेश में मारे जा रहे भारतीय–झुके बांग्लादेश के सामने। ब्रह्मपुत्र का जल–झुके बांग्लादेश ओर चीन के सामने! हुजी–झुके बांग्लादेश के सामने! कश्मीर–झुके पाक के सामने! इतने झुके कि अब घुटने टेक दिए! घुटने टेककर हाथ ऊपर कर क्या दुआएं माँगेंगे? भारत के सारे दुश्मनों को सलामत रखें? टी.वी. –मीडिया को भी इस विषय में कुछ पड़ी नहीं जो हीरो वरशिप को और हिन्दुओं को गालियाँ देने को सेकुलर जर्नालिज्म समझते हैं?हमारा देश फिर एक बार छुप–छुप कर तोड़ा जा रहा है और आसाम बन्द के बावजूद सरकारें भारत की सीमाएं बदलने जा रही हैं? इनके विद्वान, सलाहकार–जिन्होंने हिन्दुओं को गालियाँ देने का और समाज के लिए कुछ अच्छा करने वालों को बुरा भला कहने का ही ठेका ले रखा है– कह भी देंगे कि नहीं–नहीं, ऐसा कुछ नहीं, केवल **‘डिमार्केशन ऑफ एन्क्लेव्स’** हो रहा है। अंग्रेजी बोलने से क्या सत्य बदलता है?भारत की 600 एकड़ से अधिक भूमि बांग्लादेश को दी जाने की योजना बन चुकी है– यह मान्य भी नहीं करेंगे? सारा आसाम जानता है–पूर्ण भारत को जानकारी नहीं, इस खुशी में हैं सरकारें? शर्म नहीं आती देश तोड़ते हुए?अपनी निजी जागीर समझकर रखा है भारत देश को, जो किसी भी बाँट दे?

घुटने टेके हैं, अब मत्था भी रगड़ेंगे, ये भारत तोड़ने की योजना बनानेवाले और फिर माथे के दाग को दिखाकर दार–उल –इस्लाम वालों से डाक्टरेट लेंगे? भारतीयों को सत्य जानने का अधिकार है कि आसाम की इतनी भूमि बांग्लादेश को क्यों दी जा रही है? भारत की जनता की इसे सम्मति है?कब ली?किसने ली और किसने दी ? प्रधानमंत्री ने तय किया होगा ; परन्तु भारतीयों ने जेहादियों के सामने कभी घुटने नहीं टेके हैं। एक हजार वर्ष का इतिहास गवाह है! अब भी नहीं देने देंगे! एक इंच भारत भूमि किसी और देश को!

लेखक ख्यातलब्ध कैंसर सर्जन और विहिप के अन्तरराष्ट्रीय महामंत्री हैं
सम्पर्क : drtogadia@gmail.com

भगोड़े नहीं ; सम्मानित सैनिक हैं अन्ना हजारे

नई दिल्ली (एजेन्सी), 21 अगस्त। भ्रष्टाचार विरोधी लड़ाई लड़ रहे अन्ना हजारे के खिलाफ कांग्रेस प्रवक्ता मनीष तिवारी द्वारा लगाया गया आरोप सूचना का अधिकार कानून (आरटीआई) के तहत मिली जानकारी से झूठा साबित हो गया है।

आरटीआई जवाब में बताया गया है कि अन्ना कभी सेना से भगोड़े नहीं रहे। अपने 12वर्षीय कार्यकाल के बाद वह सम्मानपूर्वक नौकरी से विदा हुए। कांग्रेस प्रवक्ता द्वारा अन्ना पर आरोप लगाए जाने के बाद दिल्ली के आरटीआई कार्यकर्ता सुभाषचन्द्र अग्रवाल ने यह जानकारी मांगी थी।

जवाब में बताया गया है कि सेना में नौकरी के दौरान अन्ना हजारे को पांच मेडल भी मिले थे। इनमें– सैन्य सेवा मेडल, नाइन इयर लांग सर्विस मेडल, संग्राम मेडल, 25वां स्वतंत्रता दिवस वर्षगांठ मेडल और पश्चिमी स्टार मेडल शामिल हैं।

तिवारी ने कहा था, 'भारतीय सेना अन्नाजी से संबंधित कागजात की छानबीन कर रही है। आरटीआई के जरिए उनसे जुड़ी जानकारी मांगी गई है। सेना ने अन्ना से भी पूछा कि संबंधित जानकारी देने पर उन्हें एतराज तो नहीं है, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं भेजा है।' कांग्रेस प्रवक्ता ने दावा किया था कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने वाले अन्ना खुद दागदार हैं। सेना के दस्तावेज में उनकी छवि ठीक नहीं है।

महिला क्रांतिकारी प्रीतिलता वद्देदार

प्रीतिलता ने तोहफे को खोलकर देखा तो उसमें पिस्टल को देख वह प्रसन्नता से झूम उठी। उस तोहफे को मस्तक से लगाकर स्वीकार करते हुए वह बोली—

''आर्मी के सभी सैनिकों की भावनाओं का आदर करते हुए मैं उन्हें विश्वास दिलाती हूं कि देश—मुक्ति संग्राम की परीक्षा में खरी उतरकर अपने दल को गौरवान्वित करने का प्रयत्न करूंगी।''

सभा की कार्यवाही आरम्भ हुई। मास्टर सूर्यसेन ने सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा—

''क्रूर व अत्याचारी इंस्पेक्टर जनरल मिस्टर क्रेज की हत्या के असफल प्रयास में रामकृष्ण विश्वास पकड़े गये थे। तभी से वह अलीपुर जेल में बंद हैं। वहां उन्हें कठोर अमानवीय यातनाएं दी जा रही हैं। जेल में उनसे मिलने पर प्रतिबंध लगा है। लेकिन

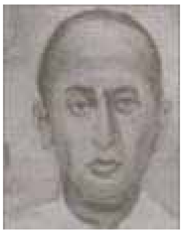

उनसे मिलना बहुत जरूरी है। आप में से क्या कोई ऐसा क्रांतिवीर है जो सभी सुरक्षा प्रबंधों का भेदन करते हुए उनसे मिलकर हमारा संदेश पहुंचा सके।''

कई क्रांतिवीर इस कार्य हेतु आगे आये। लेकिन प्रीतिलता ने कहा —

''मास्टर दा ! जब सरकार ने उनसे मिलने पर प्रतिबंध लगा रखा है तो आम नागरिक उनसे मिलने में कभी कामयाब नहीं होगा। इस जोखिम को मैं उठाऊँगी। रामकृष्ण की सगी बहन बनने का नाटक कर उन्हें गुप्त संदेश मैं पहुंचाऊँगी''।

मास्टर दा ने प्रीतिलता को यह उत्तरदायित्व सौंपते हुए जेल में जो संदेश भेजना था, उसे अलग से समझा दिया—''इंडियन रिपब्लिकन आर्मी जेल को डायमनामाइट से उड़ाकर उन्हें मुक्त कराने की योजना बना रही है।'' इस संदेश को लेकर प्रीतिलता के मिलने से चंद दिन पूर्व ही रामकृष्ण को फांसी की सजा घोषित हो चुकी थी। रामकृष्ण ने जेल को उड़ाने की जोखिम उठाने से प्रीतिलता को स्पष्ट इन्कार कर दिया। मास्टर दा को उन्होंने एक संदेश भी भी भेजा—

''मास्टर दा! भारत की स्वतंत्रता हेतु हमारे पूर्ववर्ती क्रांतिवीरों ने अपनी अस्थियों की समिधा से जिस पवित्र यज्ञाग्नि को प्रज्वलित किया है, ध्येय प्राप्ति तक अपने बलिदानों की आहुतियों से उस यज्ञाग्नि को प्रज्ज्वलित किये रखना आवश्यक है। बलिदानों की परम्परा में मेरा शरीर भी एक आहुति मात्र है। मैं चाहता तो जज महोदय की नजर—ए—इनायत से अपनी आयु बीस वर्ष से कम बता देता और झूठ बोलकर फांसी के फंदे से बच जाता। लेकिन पवित्र साध्य के लिए साधन की पवित्रता भी आवश्यक है। स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपना जीवन पुष्प अर्पित कर मुझे जिस अपार शांति का अनुभव होगा, शायद वही मेरी मुक्ति का मार्ग बन जाय।''

प्रीतिलता ने उक्त संदेश मास्टर दा तक पहुंचा दिया। रामकृष्ण विश्वास को मुक्त कराने की योजना स्थगित कर दी गयी। सूर्यसेन को पकड़वाने के लिए भारी इनाम की घोषणा हो चुकी थी। पुलिस को खुफिया सूत्रों से पता चला कि ''चटगांव के विद्रोही युवकों के साथ कुछ युवतियां भी उनकी मदद कर रही

मातंगिनी हाजरा

मातंगिनी हाजरा का जन्म मिदनापुर, होगला (पं. बंगाल) में 1870 में हुआ। वह ऐसी वीरांगना थी जिन्होंने 73 वर्ष की आयु में गोलियों से छलनी होकर भी झण्डे को झुकने नहीं दिया। इनका कार्यक्षेत्र मिदनापुर और तामलुक जिले थे। 1929 में विदेशी बहिष्कार, 1930 में टैक्स संघर्ष व नमक कानून तोड़ते हुए डांडी कूच आदि अवसरों पर इन्होंने महिलाओं को इतना जाग्रत कर दिया था कि 1930—31 के आन्दोलन में 17,000 महिलाएँ जेलों में थीं। 1932 में तामलुक में बंगाल गवर्नर के खुले दरबार में भाषण के समय 'गवर्नर वापस जाओ' नारा बुलन्द करके मातंगिनी हाजरा ने सन्नाटा पैदा कर दिया और छः माह की जेल काटी। 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ। मिदनापुर 'खतरनाक क्षेत्र' घोषित कर दिया गया। **29 सितम्बर, 1942** का दिन था। हाजरा 5000 स्त्री—पुरुषों का जुलूस लेकर 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' व 'वन्देमातरम्' नारों के साथ बढ़ती हुई तामलुक दीवानी तक पहुंच गई। ब्रिटिश अधिकारियों ने लाठियां बरसानी आरम्भ कर दीं। लेकिन यह साहसी महिला जुलूस के लोगों को प्रेरित करती हुई निरंतर आगे ही बढ़ती रही। आखिर पुलिस जुलूस को एक स्थान पर रोकने में कामयाब रही। यहां पर इनके जोशीले भाषण से पुलिस आतंकित हो उठी और तैश में आकर गोलियों की बौछार कर दी। दोनों हाथों से झण्डा छाती से चिपकाये हाजरा आगे बढ़ती रहीं। **तभी एक गोली उनके मस्तक पर लगी और वहीं बलिदान हो गईं; लेकिन गिरने से पूर्व झण्डा किसी अन्य के हाथ में थमा दिया, उसे गिरने नहीं दिया।**

हैं। इस सूचना के बाद पुलिस को शक की सुई प्रीतिलता की ओर घूमी। उसकी गतिविधियों पर दृष्टि रखी जाने लगी। एक दिन पुलिस उसका पीछा करती हुई सावित्री देवी के मकान तक पहुंच गयी। पुलिस का संदेह सही निकला।

दिनांक 12 जून, 1932 को मध्य–रात्रि के समय सावित्री देवी के मकान को सेना के जवानों ने घेर लिया। लेकिन रात्रि के अंधकार का लाभ उठाते हुए प्रीतिलता अपनी सूझबूझ से सूर्यसेन के साथ बचलकर निकलने में कामयाब हो गयी। अंग्रेज सैनिक हाथ मलते रह गये। इस मुठभेड़ में निर्मल सेन व अपूर्व सेन को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। लेकिन उन्होंने शहीद होने से पूर्व कैप्टन कैमरान को गोलियों से छलनी कर उसकी हत्या कर दी।

सावित्री देवी और उनके क्षयरोग से पीड़ित पुत्र को गिरफ्तार कर 4 वर्ष के लिए जेल में डाल दिया गया। अगस्त 1931 में प्रीतिलता और सूर्यसेन के दल के सदस्य 16 वर्षीय हरिपद भट्टाचार्य को जेल में बन्द कर दिया। अपने साथियों के नाम न बताने पर उसे इतना पीटा गया कि उसके हाथ–पैर सदा के लिए टेढ़े हो गये। उसके पिता को जेल में बुलाकर उसके सामने खूब पिटाई की गयी। इसके बाद पुलिस उसकी माँ को गिरफ्तार करने उसके घर पहुँची। उसकी माँ घबराकर पड़ोसी के घर में जा घुसी। घबराहट में उसका डेढ़ वर्षीय बच्चा घर में ही रह गया।

खूनी दरिंदे पुलिस कर्मचारियों ने उस बेजुबान बालक को जमीन पर पटका और बूटों से कुचल कर मार डाला। इसके बाद हरिपद को उसके घर ले जाया गया और उसके ही सामने घर को आग लगा दी। इन सभी शारीरिक और मानसिक यातनाओं को हरिपद भट्टाचार्य सहता चला गया लेकिन अपने साथियों के नाम व ठिकाने नहीं बताये। इन सभी यातनाओं और अत्याचारों का बदला लेने के लिये सूर्यसेन ने निश्चय कर लिया।

चटगांव शहर के उत्तर की तरफ पहारताली पर एक यूरोपियन क्लब में अंग्रेज अफसर रात्रि में प्रतिदिन मौज–मस्ती करने आते थे। यहीं पर क्रांतिवीरों पर अत्याचारों की योजनाएं बनाई जाती थीं। सूर्य सेन के आदेश पर एक बार क्लब पर आक्रमण का असफल प्रयास किया गया। इसके बाद सूर्यसेन ने प्रीतिलता से कहा–

''बहन! तुम जानती हो कि शैलेन्द्र चक्रवर्ती का यूरोपियन क्लब पर आक्रमण का प्रयास कामयाब न हो सका। 17 सितम्बर को कल्पना दत्त भी गिरफ्तार कर ली गई। तभी से वहां पुलिस का सख्त पहरा रहता है। अब यह उत्तरदायित्व मैं तुम्हें सौंपता हूं। पातिया पर कैमरान के साथ संघर्ष में तुमने ब्रिटिश सैनिकों का जिस हिम्मत और सूझ–बूझ से मुकाबला किया था उससे मुझे विश्वास है तुम इस 'एक्शन' में अवश्य कामयाब होगी। ध्यान रखना 24 सितम्बर शनिवार का दिन है। उस दिन वहां अधिक संख्या में अंग्रेज उपस्थित होंगे।''

दिनांक **24 सितम्बर 1932** रात्रि के ग्यारह बजे थे। आकाश में काली घटाएं छाई हुई थीं। बिजली की चमक और बादलों की गड़गड़ाहट वातावरण को और भी भयावह बना रही थी। लेकिन कड़कती बिजलियां और घुमड़ते बादल क्रांतिवीरों का मार्ग कभी नहीं रोक सकते। आयु केवल 21 वर्ष, लेकिन अपूर्व साहस की पुतली, मर्दानी पुलिस की पोशाक में प्रीतिलता अपने ग्यारह सदस्यीय दल के साथ यूरोपियन क्लब

शेष पृष्ठ 18 पर

मैडम भीखईजी रुस्तम कामा

मैडम भीखईजी कामा का जन्म मुम्बई के धनिक पारसी परिवार में **24 सितम्बर 1861** को हुआ था। मैडम भीखईजी कामा इलाज के लिए 1901 में लंदन गई थीं। वहां वह क्रान्तिवीरों के सम्पर्क में आईं। उन्होंने देश को दासता के बंधनों से मुक्त कराने हेतु अपने पारिवारिक बंधनों को त्याग दिया। लंदन में श्यामजी कृष्ण वर्मा के साथ मिलकर क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन करने लगीं। अपने ओजस्वी भाषणों से अंग्रेजों द्वारा भारत में किए जा रहे अत्याचारों की पोल खोली। लंदन में गिरफ्तारी की आशंका से पेरिस जाकर वीर सावरकर व लाला हरदयाल आदि क्रान्तिवीरों के साथ भारत की आजादी के संघर्ष में जुटी रहीं।

जर्मनी में समाजवादियों के अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया एवं भारत की ओर से यूनियन जैक के स्थान पर भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में 'वन्दे मातरम्' लिखा तिरंगा ध्वज फहराकर सभी को अंचभित कर दिया। इस ध्वज पर सात सितारे, कमल, सूर्य व अर्द्धचन्द्र के चिह्न अंकित थे जो कि खुशहाल भारत के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते थे। 1907 में विदेशों में फहराया जानेवाला यह प्रथम राष्ट्रीय ध्वज था। यह ध्वज आज भी पुणे में 'मराठा' व 'केसरी' समाचार पत्र के पुस्तकालय में सुरक्षित है।

प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ने पर मैडम कामा ने फ्रांस में घोषणा कर दी–'भारत इस युद्ध में अंग्रेजों का साथ नहीं देगा।' अतः अंग्रेजों के दबाव में आकर फ्रांस की सरकार ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया और युद्ध की समाप्ति पर ही 1918 में छोड़ा। चार वर्ष के कठोर कारावास से उनका शरीर जर्जर हो गया। अतः अपना अंतिम समय निकट देख अपनी मातृभूमि भारत की रज का स्पर्श पाने को वह आतुर हो उठीं। ब्रिटिश सरकार ने बड़ी कठिनाई से उन्हें भारत प्रवेश की अनुमति दी। भारत आने के कुछ माह बाद 16 अगस्त, 1936 को वह पंचतत्व में विलीन हो गईं।

"यह जीवन सतत स्वतंत्रता की वेदी पर समर्पित कर चुकी हूं और अब उसी पथ में शरीर गिरेगा। तुम्हारी प्रिय 'रानी' तुमसे अंतिम विदा ले रही है।"

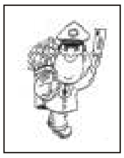

गंभीर सम्पादकीय

हिन्दू विश्व का जुलाई अंक (01–15) 2011 अपने संवाद केन्द्र में मिला, ज्ञान प्राप्त किया। सम्पादकीय गंभीर है। सिमी को कुचलना राष्ट्रहित में है। कितनी हैरानी की बात है कि युवराज राहुल ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे राष्ट्रभक्त संगठन की तुलना आतंकी संगठन सिमी से की है। संघ आतंकवाद–हिन्दू आतंक का हौवा खड़ा किया किया जा रहा है। हौवा खड़ा करने के पीछे किसका और कौन सा हित सध रहा है, इस पर विचार करना आवश्यक है। देश में व्याप्त हर समस्या के पीछे कांग्रेस है। कांग्रेस के पराभव से ही राष्ट्र का भला होगा। (18 अगस्त)

— **प्रदीप सिंह राठौर**
कानपुर

अरविन्द आश्रम

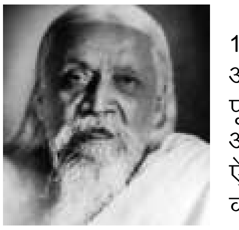

हिन्दू विश्व अगस्त 1–15 के अंक में श्री अरविन्द के विषय में पृष्ठ 14 पर योगिराज अरविन्द पढ़ा, घटना ऐसी है कि श्री अरविन्द को आंतरिक आदेश हुआ कि पाण्डिचेरी जाओ। अतः सुरेश चक्रवर्ती व्यवस्था के लिए पहले आए। जब श्री अरविन्द 10 अप्रैल, 1910 को यहां आए तो देशभक्तों ने उनकी अभ्यर्थना की। वे श्री शंकर चेट्टी के घर पर ठहराए गए। तब उनकी योजना 6 मास रहने की थी। पर ईश्वर ने उन्हें बताया कि भारतवर्ष की स्वाधीनता निश्चित है।

प्रश्न है कि स्वाधीनता के बाद भारत कैसे विश्व का गुरु या मार्गदर्शक बनेगा। श्रीमां जब अपने पति पाल रिशार के साथ पाण्डिचेरी आयी तो 1920 में उन्होंने आश्रम का दायित्व ग्रहण किया और 1926 में श्री अरविन्द 24 नवम्बर को एकान्त में चले गये तो उनके आदर्शों के प्रतिपादन हेतु आश्रम अनौपचारिक रूप से चलने लगा। 1956 में पाण्डिचेरी के कानूनी रूप से भारत में विलय के पश्चात् श्री अरविन्द आश्रम न्यास का पंजीकरण हुआ।

— **देवदत्त**
श्री अरविन्दाश्रमः, वेदपुरी
पाण्डिचेरी–605 002

प्रेरक पाठ्य सामग्री

हिन्दू विश्व, जुलाई (1–15) 2011 के अंक में सभी विचार बहुत महत्व के हैं परन्तु स्वामी विवेकानन्द जी का आह्वान 'हमे तो कर्म ही करना है', आपका सम्पादकीय 'बिल से निकले सिमी के फनों को कुचलो', फ्रांसिस गोतियर की सामयिकी 'क्या कलियुग में धर्मयुद्ध प्रारंभ हो गया है ?' तथा मा0 अशोक जी सिंहल का संस्मरण 'जब भावेजी द्वारा निर्भयता की शिक्षा दी गई' आज के सन्दर्भ में बहुत महत्व के हैं। जो तथ्य इन विचारों में प्रस्तुत किए गए हैं, वे हमें प्रेरणा देते हैं कि हम होंगे कामयाब आज नहीं तो कल !

— **लक्ष्मीचन्द**
गांव–बांध व डा0–भावगड़ी, तहसील कसौली, जिला–सोलन–173 233 (हि0प्र0)

ओसामा के आशिक

परवाह लोकतंत्र की उनको तनिक नहीं।
यादें वो जलियांवाला काण्ड की आती है।

उस 'राम' के मैदान में, रावण की कलाएं।
दिन में नहीं तो रात में, तम्बू जलाते देख।।

हीने हैं, हीन–भावना से ग्रस्त हैं, शासक।
बाबा को कहे ढोंगी, ओसामा के आशिक।।

— **आचार्य श्री मंहर**
'गुरुधाम', बावई रोड,
होशंगाबाद (म.प्र.)

हीरादह

झारखण्ड अन्तर्गत जनपद गुमला (गोमेला) के रायडीह प्रखण्ड में सुप्रसिद्ध धार्मिक सांस्कृतिक एवं पर्यटन स्थल है हीरादह। यहां रामायण कालीन एक गुफा आज भी विद्यमान है। मान्यता है कि वनवास काल में भगवान श्रीराम इस गुफा में रहे थे। ज्ञात हो कि गुमला में हनुमान जन्म स्थल ''आंजन'' व बाली सुग्रीव स्थल ''पम्पापुर'' (पालकोट) हैं। बगल में जनपद सिमडेगा में ''रामरेखा धाम'' है।

— **स्वामी गोपाल आनन्द बाबा**
ग्राम व पो0–चित्तरपुर–825101
जिला–रामगढ़ (झारखण्ड)

फूल नहीं चिंगारी..........

वीरांगना सती रानी बाई

712 (ईस्वी) में मोहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध में राजा दाहिर सेन पर आक्रमण किया। इस भयंकर आक्रमण का सामना दाहिर ने वीरतापूर्वक हजारों सैनिकों के साथ किया परन्तु राजा दाहिर युद्ध में मारा गया।

यह समाचार सुनकर राजा दाहिर की धर्मपत्नी रानीबाई राजवेश धारण कर हजारों सैनिकों के साथ दोनों हाथों में तलवार लेकर, घोड़े पर सवार होकर शत्रुओं को रौंदने लगी। रानी लड़ती जाती थी और सैनिकों में जोश भरती जाती थी–कि वीरों ! धर्मविद्रोहियों को पवित्र भूमि भारत से खदेड़ दो। पहिले लगा कि विजय मिलेगी किन्तु किले पर शत्रुओं का अधिकार हो गया। किले में तमाम नारियों को बुलाकर रानी ने कहा कि 'गोहत्यारों के हाथ में हमारी स्वाधीनता चली गई है, अब हमें किसी भी हालत में उनकी दासता में नहीं रहना है। अपना सतीत्व भंग कराकर पराधीन रहना हमें स्वीकार्य नहीं है। हम लोगों के पति स्वर्ग में हमारी राह देख रहे हैं। हमें वीर नारियों की तरह अपना धर्ममूलक कर्तव्य पालन कर वहां शीघ्र ही चलना चाहिए।

एक विशाल अग्निकुण्ड तैयार कराया गया। भगवा–वस्त्र पहिनकर सैकड़ों स्त्रियां रानी बाई के साथ दहकती ज्वाला में उतर पड़ीं। अग्नि स्नान करते हुए सहर्ष सभी स्वर्ग सिधार गईं। रानी बाई जौहर की ज्वालाओं की प्रतीक बनकर भारतीय आकाश में दिव्य नक्षत्र की भांति प्रकाशित हो रही है।

क्रमशः

'ऐसा घर बैकुण्ठ है'

एक संत गांव–गांव विचरते हुए एक बार दक्षिण भारत के किसी गांव में रुके। एक ग्रामीण ने प्रार्थना की– 'बाबा! हमारे यहां भोजन के लिए पधारे' संत भोजन के लिए बैठे, गृहणी पत्नी सामने बैठ अत्यन्त श्रद्धा से परोसती, कुछ लाने के लिये खिसक–खिसक कर चली तो संत ने अनुमान लगाया कि लंगड़ी होगी। पूछा 'देवी! क्या तुम्हारा पांव खराब है?'' ''मैं अपंग हूं बाबा! पर पूछ लें पति से, मैंने कभी इन्हें कोई कष्ट नहीं दिया। गेहूं पीसती हूं, भोजन बनाती हूं, बर्तन साफ करती हूं, इनके काम में मदद भी करती हूं, इन्हें सिर्फ पानी भरना पड़ता है।''

पति ने तुरन्त कहा– ''बाबा! मैं भी इनकी सेवा में कोई कमी नहीं रखता, सदैव ध्यान रहता है कि इन्हें इस अभाव का आभास न हों, कंधों पर बैठाकर तीर्थ–यात्रा करा लाया, सप्ताह में एक बार इसी प्रकार मंदिर ले जाता हूं, हमने कभी कोई कमी महसूस नहीं की। परस्पर सहयोग एवं स्नेह से जीवन प्रसन्नतापूर्वक यापन हो रहा है।

संत प्रसन्न, पूछा– 'तुम्हारी पत्नी अपंग कैसे हो गयी?' बाबा! यह तो जन्म से ही ऐसी है।' चकित हो पूछा– तो वत्स! तुमने इससे विवाह ही क्यों किया?'' बाबा! ईश्वर ने जब हमें जन्म दिया तो जीने का अधिकार भी मिलना ही था। यदि हर कोई अपंगों से दूर रहने लगे तो इनका जीना कठिन अर्थात् निराशापूर्ण हो जायगा। अतः स्वेच्छा ही सहर्ष स्वीकारा है।'

संत ग्रामीण के उत्कृष्ट दैवी विचारों तथा श्रेष्ठ दिव्य आचरण से मुग्ध हो, इतना ही बोले' **'वत्स! जिस परिवार में तुम्हारे–जैसा उच्च, उदात्त विचारोंवाला पति हो, पति–पत्नी में परस्पर समादर तथा सेवाभाव हो, संतों के प्रति भी श्रद्धा हो, उस परिवार का नर, नारायण और नारी, नारायणी कहलाने योग्य है और वह घर बैकुण्ठ है।'**

सुभाषित

अकुर्वन्तोऽपि पापानि शुचयः पापसंश्रयात्।
परपापैर्विनश्यन्ति मत्स्या नागह्रदे यथा।।

– (रामा0 38.26)

अर्थात् शुद्ध आचरण–व्यवहार वाले मनुष्य यदि पापियों के सम्पर्क में आ जाते हैं तो वे उनके बुरे कार्यों से स्वयं कोई अनुचित कार्य न करने पर भी उसी तरह नष्ट हो जाते हैं जैसे सांप वाले तालाब की मछलियां नष्ट हो जाती हैं।

चलो सिमरिया घाट (बिहार)

कार्तिक कुम्भ दर्शन

साल्मलीवन सामृता, भये सिमरिया धाम।
कातिक कुम्भ की परंपरा, कल्पवास परिणाम।।
कातिक कृष्ण त्रयोदशी, हरषे सुर समुदाय।
कर अमृत कलशा लिये, धन्वन्तरि प्रगटाय।।
भारत द्वादश कुम्भ स्थाना। आगम निगम पुराण बखाना।।
सतयुग आदि तिथि प्रमाना। बारहो माह कुम्भ स्नाना।।

****

कल्प कुम्भ प्रतिवर्ष विधाना। कातिक माघ वैशाख नहाना।।
गंगाद्वार प्रयाग सिमरिया। सतयुग कलियुग त्रेता द्वरिया।।
कातिक कृष्ण त्रयोदशी दीना। अमृत कुम्भ भये प्रगटीना।।
मोहिनी रूप धरे प्रभु तहिया। अमृत अमर पिलाये जहिया।।
सीमरवन से बने सिमरिया। कातिक कल्पवास जन करिया।।
याते आदि कुम्भ स्थाना। रुद्रयामय तन्त्र बखाना।।
कातिक मास महातम भारी। नित्य स्नान करहि नर नारी।।
चतुर्दशी हनुमत अवतारा। राम काज करि यश विस्तारा।।
पर्व अमावश कातिक मासा। देव पितर पावहि प्रकासा।।

****

सिन्धु सुता श्री लक्ष्मी, भाये मन भगवान्।
कृति अमावश रात्रि में, दीपावली सुहान।।

****

दीपावलि मां लक्ष्मी पूजा। परिवा अन्नकूट भ्रा दूजा।।
रविषष्ठी व्रत है प्रधाना। गोपाष्टमी गोपूजा जाना।।
अक्षय नौमी सतयुग आदी। देवोत्थान एकादशी गादी।।
द्वादश तिथि तुलसी विवाहा। कार्तिक जन्म पूरण माहा।।

पंचायती स्नान तिथि

13/10/2011 ई0 – गुरुवार।
ध्वजारोहण, कार्तिक कल्पवास का शुभारम्भ।
20/10/2011 – गुरुवार।
कार्तिक कृष्ण अष्टमी, कुम्भ पर्व का प्रथम शाही स्नान।
26/10/2011 – बुधवार।
कार्तिक अमावस्या, कुम्भ पर्व का द्वितीय शाही स्नान।
4/11/2011 – शुक्रवार।
कार्तिक शुक्ल अक्षय नवमी, कुम्भ पर्व का तृतीय शाही स्नान।
10/11/2011 – गुरुवार।
कार्तिक पूर्णिमा स्नान – दान।

हरेक माह हर जगह सुधर्मा। बारह वरष पूर्ण परिकर्मा।।
गंगा तीन समुद्र त्रिधामा।। गंगा–सागर एक सुकामा।।
ब्रह्मपुत्र ओ ब्रह्मसरोवर। एक–एक कावेरी गोदावरी।।
क्षिप्रा एक पूर्ण सब आसा। 'सत्य–नारायण' द्वादश मासा।।
चैत्र काम ब्रह्मपुत्र, वैशाख काल क्षिप्रा तट।
वैशाख–जेठ गंगाद्वार, बद्री मन ध्याइये।।
अषाढ़ सिन्धु जगन्नाथ, सावन सिन्धु द्वारिका जी।
भाद्रपद में पंचवटी, गोदावरी नहाइये।।
आश्विन कावेरी कोणम्, कार्तिक सिमरिया गंग।
अगहन में कुरुक्षेत्र, ब्रह्म सरवर पाइये।।
पौषान्त गंगा–सागर, माघ संगम प्रयागराज।
फागुन 'सत्य' शिवरात्रि, रामेश्वरम् जाइये।।

प्रस्तुति : सत्यनारायण मिश्रा
अखिल भारतीय श्रीरामचरित मानस प्रचार संघ
केन्द्रीय कार्यालय – बाबा श्री बिरजेश्वर धाम ब्रह्मबाना।
पोस्ट – लाटबसेपुरा, जिला–समस्तीपुर (बिहार)

सूर्य नमस्कार

4. अश्व संचालन आसन – इस स्थिति में अब बाएं पैर को जितना पीछे ले जा सकते हैं, ले जाएं। हाथों को दाहिने पैर के आगे रखकर गर्दन को पीछे की ओर तानिए। अब ' भानवे नमः' मंत्र का जाप करें। इसमें हमारा ध्यान 'आज्ञा चक्र' पर होगा।

5. पर्वतासन – इस स्थिति में दोनों हाथों को आगे कर कन्धों के समानान्तर सीधा भूमि पर जमाएं और फिर दोनों टांगों को पीछे की ओर तानिए, एड़ियां जमीन पर से न उठें। नितम्बों को ऊपर जितना हो सके ले जाएं। ' खगाय नमः' मंत्र का जाप करें। हमारा ध्यान 'विशुद्धि चक्र' पर होगा।

6. अष्टांग नमस्कारासन – इस स्थिति में घुटने मोड़ते हुए शरीर को जमीन की तरफ इस प्रकार झुकाएं कि दोनों पादपृष्ठ, दोनों घुटनों, छाती, दोनों हाथों के पंजों एवं ठुड्डी जमीन को स्पर्श करें और हमारा नितंब व उदर प्रदेश जमीन से थोड़ा ऊपर रहे। ' पूष्णे नमः' मंत्र का जाप करें। हमारा ध्यान 'मणिपुर चक्र' पर रहेगा।

7. भुजंगासन – हाथों को सीधा करें। शरीर के अगले हिस्से–सिर, छाती और कमर के भाग को ऊपर उठाते हुए सिर तथा गर्दन को पीछे की तरफ झुकाएं 'हिरण्यगर्भाय नमः' मंत्र का जाप करें। हमारा ध्यान 'स्वाधिष्ठान चक्र' पर होगा।

क्रमशः

रसवती

लौकी मंचूरियन

सामग्री : मंचूरियन बॉल्स के लिए 250 ग्राम लौकी, 3 छोटे चम्मच कॉर्नफ्लार, 4 छोटे चम्मच ज्वार का आटा, 2 करीब कटी हरी मिर्च, 2 छोटा चम्मच अदरक पेस्ट, 1 छोटा चम्मच काली मिर्च, 1 छोटा चम्मच नींबू रस, 2 छोटा चम्मच सोया सॉस और आवश्यकतानुसार तेल। सॉस के लिए 2 बड़े चम्मच सोया सॉस, 2 बड़े चम्मच कॉर्नफ्लार, 3 बड़े चम्मच टमाटर सॉस, 1 बड़ा चम्मच अदरक व लहसुन पेस्ट, 2 हरी मिर्च, थोड़ा सा हरा धनिया, स्वादानुसार नमक। 1 प्याज, 2 छोटा चम्मच काली मिर्च।

विधि : लौकी छीलकर कीस लें। इसमें चुटकी भर नमक डालकर 5 मिनट के लिए रख दें। इसके पश्चात् लौकी को हाथ से निचोड़कर अतिरिक्त पानी निकाल दें। अब इसमें 2 छोटे चम्मच कॉर्नफ्लार व 4छोटे चम्मच ज्वार का आटा मिलाएं। साथ ही अदरक, बारीक कटी हरी मिर्च, काली मिर्च और स्वादानुसार नमक मिला लें। तैयार मिश्रण से बराबर आकार के छोटी–छोटी बॉल्स बनाएं। एक कड़ाही में तेल गर्म करके मंचूरियन बॉल्स को सुनहरा होने तक तल लें।

सॉस बनाने के लिए

कड़ाही में तेल गर्म करें। इसमें बारीक कटा अदरक, हरी मिर्च, लहसुन और प्याज डालकर भून लें। अब सोया और टमाटर सॉस मिलाएं। साथ ही 2 कटोरी गर्म पानी मिला लें। एक उबाल आने तक चलाती रहें। स्वादानुसार नमक व काली मिर्च डालें। सर्व करते समय बोल में मंचूरियन बॉल्स रखें और ऊपर से गर्मा–गर्म सॉस डालकर परोसें।

मंदसौर (म0प्र0), 22 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद के स्थापना दिवस व भगवा विहिप द्वारा भव्य चल समारोह निकाला गया। भगवान् श्रीकृष्ण व अन्य देवी–देवताओं कीन श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में महिमा बताने वाली 15 झांकियां व अद्भुत शस्त्र कला का प्रदर्शन करने वाले मंदसौर के 10 अखाड़े शामिल हुए। सत्संग भवन खानपुरा से प्रारंभ हुआ। चल समारोह गांधी चौराहा विश्वपति शिवालय पहुंचा और धर्म सभा में परिवर्तित हुआ। बजरंग दल कार्यकर्ताओं के साथ ही शामिल झांकियों में बालक बालिकाओं ने राधा–कृष्ण का वेश धारण कर शोभायात्रा की शोभा बढ़ाई। ढोल की सुमधुर ध्वनि पर युवाओं की टीमों ने नृत्य कर श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के प्रति अपनी प्रसन्नता अभिव्यक्त की। कई स्थानों पर चल समारोह का स्वागत हुआ। हुसैनी अखाड़ा ने विहिप पदाधिकारियों व अखाड़ों के उस्तादों को साफे बांधे। बजरंग व्यायाम शाला ने मटकी फोड़ी। मातृशक्ति भगवा ध्वज लेकर चल रही थीं। दुर्गावाहिनी की बालिकाएं केसरिया दुपटटे में चल रही थी। इनके साथ राधा–कृष्ण के वेश में चल रहे दो बालक आकर्षण का केंद्र थे। जुलूस में कृष्ण लीला के साथ भगवान शंकर से जुड़ी झांकियां भी थीं।

ambarishsinghvhp@gmail.com

नई दिल्ली, 23 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद के 47वें स्थापना दिवस के अवसर पर दिल्ली में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कहीं यज्ञ, कहीं प्रभातफेरी तो कहीं गोष्ठियों का आयोजन हुआ।

ivhpmedia@gmail.com

पूर्वी दिल्ली, 28 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद गांधीनगर जिला की ओर से चन्द्रनगर स्थित समुदाय भवन में दिल्ली साहित्य परिषद के तत्वावधान में भव्य रासलीला का मंचन किया गया। विहिप–केन्द्रीय परामर्शदाता बी0एल0 शर्मा ने लोगों से आग्रह किया कि मन्दिरों में एकत्रित धन को समाजसेवा में लगाया जाए तो ये ही सबसे बड़ा धर्म होगा।

मुख्य अतिथि, पूर्व सांसद व सुप्रसिद्ध क्रिकेटर चेतन चौहान, विहिप दिल्ली प्रांत के महामंत्री सत्येन्द्र मोहन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग कार्यवाह दयानन्द, निगम पार्षद वी0के0 मोंगा व रवि शर्मा, श्रीमती नीमा भगत, कार्यक्रम के मुख्य संयोजक जिला अध्यक्ष वीरेन्द्र जरयाल व मंत्री महेश राम थे। बड़ी संख्या में लोगों ने उत्सव का आनन्द उठाया।

jdcom123@yahoo.com

दिल्ली, 29 अगस्त। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव के उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बद्रीभगत झण्डेवाला देवी मंदिर में श्रीकृष्ण लीला एवं झाकियों का भव्य आयोजन किया गया। वृन्दावन के कलाकारों द्वारा श्रीकृष्ण के विभिन्न चरित्रों का चित्रण, लीला एवं रास के माध्यम से किया गया। सम्पूर्ण मंदिर को अनेक झांकियों से सजाया गया। रात्रि 12 बजे कृष्ण

जन्म के पश्चात् मंदिर में आए सभी भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया।

– **प्रस्तुति : रमेश गुप्त 'अनिल'**
सचिव–बद्रीभगत झण्डेवाला टेम्पल सोसायटी

विश्व हिन्दू परिषद **जोधपुर (राज.)** महानगर द्वारा जन्माष्टमी पर्व विहिप के 48वें स्थापना दिवस के रूप में मनाया गया। जन्माष्टमी की पूर्व संध्या पर केशव नगर प्रखण्ड द्वारा कृष्ण श्रंगार प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 6 वर्ष की आयु के बच्चों ने सहभागिता की। विहिप महानगर अध्यक्ष ईश्वरलाल चाण्डक द्वारा बच्चों को पारितोषिक प्रदान किया गया।

जन्माष्टमी के दिन बजरंग दल द्वारा मेडिकल कालेज के बाहर 'भ्रष्टाचार की मटकी फोड़ो' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बजरंग दल के विभिन्न प्रखण्डों के कार्यकर्ताओं ने भ्रष्टाचार की काली मटकी फोड़ो प्रतियोगिता में भाग लेते हुए अन्ना हजारे के जनलोकपाल बिल का समर्थन किया।

नन्दनवन नगर द्वारा जूना खेड़ापति बालाजी मंदिर में भजन संध्या कार्यक्रम, सुरसागर प्रखण्ड में हिन्दू हेल्प लाईन प्रमुख विक्रमसिंह राजपुरोहित द्वारा कान्हा मटकी फोड़ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रस्तुति : कैलाश कुमार

विश्व हिन्दू परिषद **पूर्व आन्ध्र** प्रांत श्री सत्यसदन, सत्यनारायणपुरम्, **विजयवाड़ा** में 21 अगस्त को बालगोकुलम् एवं विहिप स्थापना दिवस आयोजित किया गया। श्रीकृष्ण वेषधारण, कोलाटम, भजन, गीत, गाकर रैली रूप में प्रदर्शन किया। श्री चल्ला लक्ष्मीनारायण (भारत संस्कृत परिषद प्रमुख–पूर्व आन्ध्र) ने विहिप–स्थापना का उद्देश्य बताया।

हरियाणा

हिसार, 22 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद के प्रकल्प भारत माता मंदिर में जन्माष्टमी पर 'कृष्ण सजाओ उपहार पाओ' कार्यक्रम के अन्तर्गत नन्हे–मुन्ने कान्हाओं का मेला सा लग गया। मंदिर के मुख्य हाल में मस्ती में झूमते कान्हाओं का दृश्य सभी को आत्मविभोर कर रहा था। गौर हरि संकीर्तन मण्डल व देवता स्वीट्स के सहयोग से कान्हाओं को उपहार दिए।

विहिप-स्थापना दिवस/ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विविध आयोजन

जन्माष्टमी के पावन पर्व पर अपने स्थापना दिवस पर विहिप हरियाणा ने वेबसाईट जारी की। यूथ फार नेशन के बैनर तले सैकड़ों युवकों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ शंख, घड़ियाल, थाली आदि बजाकर जोरदार प्रदर्शन किया। जन लोकपाल बिल को लेकर विहिप के प्रकल्प स्थानीय भारत माता मंदिर से सैकड़ों महिलाओं ने अन्ना के समर्थन में कैंडल मार्च किया।

प्रस्तुति : विजय शर्मा
vijayksharma40@gmail.com

अम्बाला (हरियाणा), 22 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद ने श्री कृष्ण जन्माष्टमी का त्यौहार हर्षोल्लास से प्राचीन शिव मंदिर में मनाया। सभी कार्यकर्ताओं ने लड्डू गोपाल को झूला झुलाया व भजन–कीर्तन किया। विहिप–जिलाध्यक्ष रमेश जोशी ने बताया कि आज का दिन विश्व हिन्दू परिषद के स्थापना दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। मुलाना–नहौनी में भी विहिप–स्थापना दिवस मनाया गया।

बाबा आमटे को कुष्ठरोगियों की सेवा में दिखता था भगवान

नई दिल्ली, 28 अगस्त। वरोरा के महारोगी सेवा समिति के अध्यक्ष डॉ0 विकास आमटे ने नागपुर में कहा कि बाबा आमटे व्यक्ति नहीं; प्रक्रिया थे।

बाबा एक वैज्ञानिक थे, आनंदवन उनकी प्रयोगशाला थी। उसमें धर्म और राजनीति के लिए प्रवेश वर्जित था।

डॉ0 आमटे आकाशवाणी महानिदेशालय के ध्वनि संग्रहालय की ओर से प्रकाशित और गोपालदास द्वारा लिए गए प्रसिद्ध समाजसेवी बाबा आमटे के रेडियो साक्षात्कार पर आधारित रेडियो आत्मकथा **'एक और गंगोत्री'** के लोकार्पण समारोह में बोल रहे थे। इस मौके पर नागपुर के इंस्टीटयूट ऑफ इंजीनियर्स के सभागार में 'सेवा समर्पण से सफलता के सोपान : बाबा आमटे' विषय पर विचारगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। डॉ0 आमटे ने कहा कि दीन–दलितों से मित्रता का पर्याय है आनंदवन। आनंदवन सुंदरता का दूसरा नाम है।

आकाशवाणी के नागपुर केन्द्र की ओर से जारी बयान के मुताबिक 'हितवाद' के संपादक विजय फणशीकर ने बाबा आमटे के साथ बिताए क्षणों को याद करते हुए कहा कि बाबा निर्भय थे, अहंकार और स्वार्थ उनके पास नहीं फटकते थे। बाबा सिर्फ महारोगियों के मसीहा नहीं थे बल्कि हम सबके मसीहा थे। जयपुर की समाजसेवी और 'एक ओर गंगोत्री' के लेखक गोपालदास की पुत्री डॉ0 निर्मला सेन ने कहा कि बाबा पर उनकी माताजी, विनोबा जी और गांधी जी का गहरा प्रभाव था।

'अंतरभारती' पत्रिका के संपादक सदाविजय आर्य ने बाबा आमटे को 'पावर हाउस' बताते हुए कहा कि इस पावर हाउस से ऊर्जा लेकर हमने अपने घरों और दिलों में नई रोशनी लानी चाही। सेवाग्राम आश्रम के अध्यक्ष एडवोकेट मा0म0 गडकरी ने कहा कि गांधीजी ने सत्य–अहिंसा में भगवान के दर्शन किए तो बाबा आमटे को कुष्ठरोगियों की सेवा में भगवान दिखता था।

पृष्ठ 13 का शेषांश

पर पहुंच गयी। मौसम खराब होने के कारण पुलिस भी ढीली पड़ गई थी। उस समय क्लब में लगभग 40 पुरुष, महिला और बच्चे मौजूद थे।

प्रीतिलता के एक संकेत पर क्रांतिवीरों ने खिड़की से बम और गोलियां दागनी आरम्भ कर दीं। क्लब की दीवारें हिल उठीं। क्लब की ओर से भी गोलियां चलीं। इसी बीच पुलिस भी हरकत में आ गई। प्रीतिलता ने स्वयं पुलिस से उलझते हुए अन्य साथियों को बचकर भागने का अवसर दे दिया। प्रीतिलता को संघर्ष में बाँह में कई गोलियां लगी। वह फिर भी संघर्ष करती रही। अंत में वह चारों ओर से घिर गई। पुलिस द्वारा गिरफ्तार करने से पूर्व ही उसने सायनाइड जुबान पर रखा और आत्म–बलिदान का मार्ग अपना लिया। पुलिस को प्रीतिलता का कीचड़, पानी और रक्त से सना शव ही हाथ लगा। उसकी तलाशी लेने पर उसके पास से दो पत्र मिले। एक पत्र उसकी माँ के नाम था, जो 'एक्शन' पर आने से पर एक दिन पूर्व उसने लिख कर अपने पास रख लिया था। उस में लिखा था–

''माँ! मैंने तुम्हें स्वप्न में देखा, रोते हुए। माँ तुम मुझे क्षमा कर देना। मुझे बन्दिनी भारत माता की पुकार ने विवश कर दिया, घर छोड़ने के लिए, क्योंकि भारत माँ मेरा उष्ण रक्त मांग रही थी। आशीर्वाद दो माँ! कि मैं अपने ध्येय की पूर्ति में सफलता प्राप्त करूं। मेरे घर छोड़ने को तुम अन्यथा न लेना। तुम रोओ मत माँ। यह जीवन सतत स्वतंत्रता की वेदी पर समर्पित कर चुकी हूं और अब उसी पथ में शरीर गिरेगा। तुम्हारी प्रिय 'रानी' तुमसे अंतिम विदा ले रही है।''

दूसरे पत्र में ब्रिटिश साम्राज्य के काले कारनामों का वर्णन था। अंग्रेज अधिकारियों को उन काले कारनामों के लिए गंभीर परिणाम भुगतने की चेतावनी थी। पत्र के अंत में देश की आजादी का संकल्प एवं विश्वास प्रकट किया गया था। इस प्रकार प्रीतिलता ने अल्पायु में ही आत्म–बलिदान का जो मार्ग चुना, उस पर सारे राष्ट्र को गर्व है। ऐसी बलिदानी वीरांगनाओं से आज राष्ट्र के कर्णधारों को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। **(समाप्य)**

'बलि–पथ की वीरांगनाएँ' पुस्तक से साभार

संन्यासी नहीं प्रन्यासी चाहिए!

– गोविन्ददासजी

विहिप–हिमाचल की प्रांतीय बैठक 30–31 जुलाई को राम कृष्ण आश्रम नादरोई में हुई जिसमें उद्घाटन सत्र में पू0 गोविन्द दास जी महाराज ने कहा कि कार्य के लिए हम सबने समय दिया है। आज समाज में अपने कार्य का महत्व दिखाई दे इसके लिए हमे अधिक प्रवास करना है। भगवान् राम ने भी 14 वर्ष का प्रवास कर इन कुरीतियों से हिन्दू समाज को मुक्ति दिलाई थी। हमें संन्यासी नहीं प्रन्यासी चाहिए।

विहिप–केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री चम्पतराय व क्षे0सं0 मंत्री कैलाश सिंहल ने आगामी कार्ययोजना की जानकारी दी। विहिप के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष पंडित विष्णु दत्त ने नवीन दायित्वों की घोषणा की। प्रांतीय कोषाध्यक्ष रामकुमार बिन्दल, सह संगठन मंत्री मनोज कुमार ने भी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया। संचालन प्रांत मंत्री संसार पाल ने किया।

6 अगस्त को रामकृष्ण आश्रम नादरोही (हिमाचल) में दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में **विहिप के केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री चम्पतराय** ने कहा कि हम युवतियों को संस्कार देकर आदर्श नारी का स्वरूप प्रकट करते हैं। देश और समाज की परिस्थिति को देखते हुए प्रत्येक घर की युवती संस्कारित हो, इसके लिए हम ये सात दिवसीय वर्ग का आयोजन करते हैं। यहां दण्ड, निःयुद्ध और रायफल की जो शिक्षा हमने दी है वो किसी फौज में भेजने के लिए नहीं, अपनी आत्मरक्षा के लिए। नारी अबला नहीं सबला है। विहिप–क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री कैलाश सिंहल ने भी विचार व्यक्त किए। वर्ग में 12 जिलों के 30 स्थानों से 64 युवतियां शामिल हुईं। वर्ग का समारोप करते हुए आश्रम के महंत गोविन्ददास गिरि जी ने कहा कि दुर्गा, लक्ष्मीबाई, अमानकटी बाई, पद्मिनी जैसी अनेक वीरांगनाओं ने देश को बचाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया है। आज हम संस्कारों को बचाने के लिए कुछ समय समाज के लिए दें। वर्ग में मातृशक्ति की प्रदेश संयोजिका विमला अंगीरस, मंजू, बबली, रजनी, पूजा, हेमा, नीलम, भावना और नीतिका प्रशिक्षार्थी रहीं।

vhp.manoj77@gmail.com

हिन्दुओं के प्रति भयानक कानून नहीं बनने देंगे!

–स्वामी विवेकानन्दजी

मेरठ (उ0प्र0), 2 अगस्त। प्रस्तावित साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा अधिनियम–2011 काले कानून के विरोध में कमीश्नरी पार्क मेरठ में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित धरना–प्रदर्शन में गुरुकुल प्रभात आश्रम के कुलाधिपति स्वामी विवेकानन्दजी ने राजसत्ता को ललकारते हुए कहा कि 'सोनिया गांधी को कोई अधिकार नहीं है कि इस देश के पवित्र बहुसंख्यक हिन्दू समाज को समाप्त करने के लिए इस तरह का कानून बनाएं। यह राम–कृष्ण और गौतम की धरती है और हम किसी भी सूरत में एक विदेशी महिला द्वारा हिन्दुओं के प्रति भयानक कानून नहीं बनने देंगे।

विहिप–विभाग संगठन मंत्री सुदर्शन चक्र महाराज, प्रांत गोरक्षा प्रमुख बलराज डूंगर ने भी प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित किया। राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को प्रस्तुत किया गया।

प्रस्तावित विधेयक के विरोध में 24 जून को **हरियाणा** के नहरपार पल्ला, सराय ख्वाजा तथा चावला कालोनी बल्लभगढ़ में 25 जून को तिगांव में तथा 27 जून को कोर्ट सेक्टर–12 पर धरना व प्रदर्शन हुए। तहसीलदार ने राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन प्राप्त किए। प्रदर्शनकारियों को कैलाश सिंहल, आत्मप्रकाश सेतिया, बी0आर0 सिंगला, शिवदत्त वशिष्ठ ने सम्बोधित किया। विभिन्न संस्थाओं के सैकड़ों लोग सहित 25 वकील तथा 50 महिलाएं भी प्रदर्शन में सम्मिलित हुए।

जिला बैठक – फरीदाबाद जिला बैठक 19 जुलाई, 2011 को श्रीरघुनाथ मंदिर में हुई जिसमें 45 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। श्री बी0आर0 सिंगला का स्थानान्तरण शिमला हुआ। इनके द्वारा संगठन सेवा की प्रशंसा हुई।

प्रस्तुति : रमेश कुमार गुप्ता
जिला अध्यक्ष, फरीदाबाद

कोटा (राजस्थान) में

दस हजार युवाओं ने लिया अखण्ड भारत का संकल्प

कोटा। भारतीय लोक कल्याण प्रन्यास तथा युवा भारत समिति कोटा की ओर से 7 से 14 अगस्त तक अखण्ड भारत सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत शहर के 28 विद्यालयों तथा एक महाविद्यालय में अखण्ड भारत के बारे में विभिन्न कार्यक्रम, गोष्ठियां तथा चर्चा सत्र आयोजित हुए। कोटा महानगर के कईं प्रमुख स्थानों के आठ चौराहों पर सार्वजनिक कार्यक्रम द्वारा अखण्ड भारत के बारे में विस्तृत जानकारी देने के साथ ही करीब दस हजार युवाओं को अखण्ड भारत का संकल्प दिलाया गया।

गुमानपुरा क्षेत्र में अखण्ड भारत के लिए एक संकल्प वाहन रैली का आयोजन भी किया गया जो सूरजपोल से प्रारंभ होकर गुमानपुरा तिराहा, बल्लभनगर चौराहा, घोड़ेवाले बाबा सर्किल, एयरोडम से होती हुई छावनी चौराहे पहुंची। जहां अखण्ड भारत को लेकर संकल्प लिया गया।

ashish_mhta@rediffmail.com,

विहिप केन्द्रीय सहमंत्री श्री परमानन्द मनोहर के पैत्रक गांव **मनोहर थाना (राजस्थान)** में अखण्ड भारत दिवस 14 अगस्त विहिप संयुक्त महामंत्री चम्पतराय के सान्निध्य व मध्य भारत प्रान्तीय संगठन मंत्री रोहित भाई, विभाग संगठन मंत्री देवी सिंह, स्थानीय नागरिक कन्हैया लाल की उपस्थिति में उल्लासपूर्वक मनाया गया, सैकड़ों नागरिक सहभागी हुए।

बजरंग दल **जोधपुर** महानगर द्वारा 14 अगस्त को अखण्ड भारत दिवस के रूप में मनाया गया। विद्याभारती मंदिर गुरुओं का तालाब व बजरंग दल के संयुक्त तत्वावधान में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भव्य आयोजन विद्यालय प्रांगण में किया गया। अखण्ड भारत का दीपमाला से चित्र बनाकर विहिप, बजरंग दल व विद्यालय के विद्यार्थियों एवं अभिभावकों द्वारा पूजन करते हुए अखण्ड भारत का संकल्प लिया गया। विहिप के प्रांत कार्याध्यक्ष प्रो0 भवानीलाल माथुर व वरिष्ठ उपाध्यक्ष गणपतसिंह राजपुरोहित ने सम्बोधित किया। प्रखण्ड के संयोजक कुमार कृष्ण आचार्य ने अखण्ड भारत का संकल्प, मदन सुथार ने संचालन, प्रधानाचार्य रिछपालसिंह ने अतिथियों का स्वागत परिचय करवाया। 17 अगस्त को बजरंग दल द्वारा मशाल जुलूस निकालकर युवाओं को अखण्ड भारत का संदेश दिया।

▸ गत 14 अगस्त को **कोलकाता** महानगर के दक्षिण कोलकाता अंचल में अखण्ड भारत दिवस का आयोजन बजरंग दल कोलकाता महानगर के तत्वावधान में किया गया। सामाजिक कार्यकर्ता हरिनारायण तिवारी, परिषद के सह सभापति एडवोकेट तारकेश्वर पाल, सुब्रत मुखर्जी एवं प्रांतीय कार्यालय से अशोक दुबे ने अपने–अपने वक्तव्य में उन शक्तियों को चेतावनी दी जो भारत माता को पुनः खण्डित करने की साजिश में लगी हैं।

विश्वजीत दा के नेतृत्व में श्रीहनुमान चालीसा के पाठ से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ एवं उपस्थित जनसमूह को आवाहन किया गया कि सभी हनुमत् शक्ति की आराधना करें ताकि समाज में व्याप्त आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त की जा सके। प्रस्तावित साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा अधिनियम–2011 विधेयक की तीव्र निन्दा की गयी। श्री पितारन मुखर्जी के नेतृत्व में वंदे मातरम् गीत के साथ सभा सम्पूर्ण की गयी।

छत्तीसगढ़

बी0 चिन्नाराव के नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल जिला–भिलाई के तत्वावधान में 14 अगस्त को आयोजित अखण्ड भारत दिवस शिव मंदिर से एक विशाल जलूस निकाला गया। जिसमें सौ मशाल लिए पांच सौ लोग शामिल थे। प्रदेश मंत्री छ0ग0 कौशलेन्द्र प्रताप सिंह, भिलाई जिला मंत्री, अनिल कुमार शुक्ला, भिलाई जिला संयोजक जी. कृष्णा, सहसंयोजक व सचिन कुमार भी उपस्थित थे।

▸ **मेरठ (उ0प्र0),** 16 अगस्त ने बजरंग दल मेरठ महानगर की ओर से सूरजकुण्ड, मेरठ स्थित केशव भवन में 'अखण्ड भारत संकल्प दिवस' के उपलक्ष्य में एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता विहिप के प्रान्त उपाध्यक्ष चौधरी अमन सिंह व संचालन प्रांत गोरक्षा प्रमुख बलराज डूंगर ने किया।

मुख्य वक्ता **विहिप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री महावीर जी** ने कार्यकर्ताओं से संकल्प कराते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि हिन्दू नौजवानों को अपने भीतर की शक्ति को जगाना होगा अन्यथा आनेवाले 15–20 वर्षों में हिन्दुओं की जो हालत होगी, उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। मेरठ महानगर के गोरक्षा प्रमुख इन्द्रपाल बजरंगी, विभाग संगठन मंत्री सुदर्शन चक्र, रोहित त्रिपाठी, अनिल जिन्दल, संजीव राणा, राजीव गर्ग, राहुल गोयल, नीरज त्यागी का मुख्य रूप से सहयोग रहा।

netxcybercafe@gmail.com

मातृभाषा में बोलने पर एक हजार का जुर्माना

त्रिचूर–केरल (प्रेट्र), 26 अगस्त। यहां एक अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में कुछ छात्रों को अपनी मातृभाषा मलयालम में बातें करना महंगा पड़ गया। स्कूल प्रशासन ने इन विद्यार्थियों पर एक–एक हजार रुपये जुर्माना लगाया। जिले के इस सीबीएसई से संबद्ध स्कूल के परिसर में अंग्रेजी को छोड़ बाकी भाषाओं में बोलने पर मनाही है। घटना होली ग्रेस इंग्लिश मीडियम हायर सेकेण्डरी स्कूल की है। विरोध में छात्रों के अभिभावकों ने स्कूल के बाहर प्रदर्शन किया।

आन्ध्र का प्रांतीय अधिवेशन

विश्व हिन्दू परिषद **पूर्व आन्ध्र** प्रांत में पश्चिम गोदावरी जिला में जबुलपालिम गांव में (श्री गोकराजु गंगराजू विहिप केन्द्रीय उपाध्यक्ष का पैत्रक गांव) अगस्त 9–10 को धर्मप्रसार विभाग का प्रांत अधिवेशन आयोजित किया गया। 14 प्रखण्ड, 15 धर्मप्रसार विभाग के जिला प्रमुख और धर्मप्रसार प्रांतसमिति के सदस्यों सहित 70 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

वाई0 राघवुलू विहिप –के0संयुक्त महामंत्री, के0 हरनाथ रेड्डी, वबिलिशेट्टि वेंकटेश्वरलु (प्रांत कार्याध्यक्ष), हनुमंतराव–(प्रांत मंत्री), कन्ना भास्कर–(प्रांत संगठन मंत्री), लोकनाथ शर्मा–(धर्मप्रसार विभाग का अ0भा0उपाध्यक्ष) एवं (पूर्व आन्ध्र प्रांत धर्मप्रसार विभाग का अध्यक्ष) श्याम प्रसाद मुखर्जी, (प्रांत धर्मप्रसार कार्याध्यक्ष) डी0 संजीवैया आदि ने भाग लिया।

प्रस्तुति : ए0वी0 रामाराव

गंगा-कटरी क्षेत्र में रुद्राभिषेक

कायमगंज, फर्रूखाबाद (उ0प्र0), 7 अगस्त। गंगा कटरी क्षेत्र के बाढ़ पीड़ितों को बाढ से संकट से बचाने व भोले बाबा को प्रसन्न करने हेतु सावन के पवित्र माह में नगर के प्रमुख मनी ब्रोकर, समाज सेवी एवं श्रीराम कथा महायज्ञ समिति के महामंत्री हरेराम अग्रवाल, उनकी धर्मपत्नी मधुरानी अग्रवाल सहित परिजनों ने गंगा कटरी क्षेत्र के ग्राम मोतीनगला स्थित श्री सिद्ध भोले बाबा मंदिर में भगवान शिव की पूजा अर्चना वैदिक मंत्रोच्चार के साथ शिवलिंग का विधि विधान से भव्य रूद्राभिषेक कर भगवान भोले से गंगा कटरी क्षेत्र के वाशिंदों को बाढ़ के प्रकोप से बचाने हेतु पूजा अर्चना कर मनौती मांगी। पूजन विश्व हिन्दू परिषद के धर्मप्रसार विभाग के सदस्य, कानपुर मण्डल के संरक्षक विद्वान पं. आचार्य **देवीसहाय पालीवाल** द्वारा कराया गया। प्रसाद के रूप में सुरुचिपूर्ण दाल–रोटी का भोज कार्यक्रम आयोजित किया गया। गणमान्य नागरिकों ने सपरिवार उक्त भोज कार्यक्रम में शामिल होकर प्रसाद के रूप में सुरुचिपूर्ण भोज ग्रहण कर पुण्य के भागीदार बने।

बाल संस्कार केन्द्र

बैतूल (म0प्र0), 27 जुलाई। विश्व हिन्दू परिषद के धर्मप्रसार विभाग के तत्वावधान में 27 जुलाई को शंकर वार्ड में बाल संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ किया गया। विश्व हिन्दू परिषद धर्म प्रसार विभाग की बालकों–बालिकाओं को संस्कारित करने की योजना के अनुरूप बाल संस्कार केन्द्र का संचालन नारी शक्ति मंच के मार्गदर्शन में किया जाएगा।

प्रस्तुति : गिरिधारी लाल भीखाणी

मेंहदी कार्यक्रम

शिलचर (असम) में एकल विद्यालय योजना के सर्वांगीण विकास हेतु जहां पुरुष सक्रिय हैं वहीं महिला समिति भी पीछे नहीं है। 12 अगस्त हास्पिटल रोड स्थित विधान मेंशन में चैप्टर महिला द्वारा आयोजित '**मेंहदी**' कार्यक्रम में जो भी पुरुष या महिला मेंहदी लगवाती थी सभी के लिए 100/– शुल्क रखा गया था। इसी शुल्क को संग्रहीत कर महिला समिति एकल विद्यालय के सहयोग में खर्च करती हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु शिलचर चैप्टर महिला समिति की अध्यक्षा हेमलता सिंगोदिया, उपाध्यक्षा सुन्दरी पटवा, सचिव नीता खंडेलवाल, कोषाध्यक्ष सविता चमड़िया, विमला जैन सहित कई महिलाओं ने सराहनीय योगदान किया।

आचार्यों का प्रशिक्षण वर्ग

एकल विद्यालय

विद्या विकास सेवा समिति पूर्व **आन्ध्र** प्रान्त द्वारा एकल विद्यालय आचार्यों का मासिक एक दिन का वर्ग सत्यनारायणपुरम, **विजयवाड़ा** में विकास सेवा समिति कार्यालय में आयोजित किया गया। श्रावण शुक्रवार को वरलक्ष्मी पूजा की गई। बाद में बच्चों के लिए शिक्षा के साथ संस्कार साधना प्रक्रिया से किस प्रकार सिखाया जाय, ऐसा प्रशिक्षण दिया। श्रीमती भारती राणे (दुर्गावाहिनी प्रमुख) ने बालिकाओं को किशोरी परामर्श ओर व्यवहार कैसे करना बताया। संगठक श्रीमती झान्सीराणि, श्रीमती बसंतराणि, श्रीमती शेषुकुमारी ने भाग लिया। श्रीमती कोकिलाम्ब ने संच प्रमुख पर्यवेक्षण किया। (12 अगस्त)

प्रस्तुति : के. भास्करराव

रक्तदान शिविर

गंजबसौदा (म0प्र0), 22 अगस्त। स्थानीय शासकीय चिकित्सालय में आयोजित रक्तदान शिविर में ग्यारह कार्यकर्ताओं ने रक्तदान किया। रक्तदान के बाद इन सभी का सम्मान किया गया, रक्त परीक्षण शिविर में सात हजार रक्तदाताओं को समूहशः सूचीबद्ध किया गया है।

प्रस्तुति : दिनेश तिवारी

हरिद्वार में सेवा शिविर

कांवड़ यात्रियों की सुविधा के लिए बजरंग दल हरिद्वार द्वारा 11 दिवसीय सेवा शिविर लगाया गया जिसमें, चिकित्सा, जलपान व विश्राम हेतु व्यापक व्यवस्था की गई थी। रात–दिन चले इस शिविर से लाखों कांवड़ियों ने लाभ उठाया। जिला प्रशासन ने बजरंग दल के शिविर में आकर इस कार्य की प्रशंसा की। सेवा कार्य बजरंग दल के जिला संयोजक अनुज वालिया, विजेन्द्र पंवार, इन्द्रजीत सिंह, चरणजीत पाहवा, सुरेन्द्र सैनी, दिनेश ठाकुर के सहयोग से आयोजित किया गया।

प्रस्तुति : मोहन उपाध्याय

साध्वी प्रज्ञा की जमानत याचिका पर फैसला सुरक्षित

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को मालेगांव बम विस्फोट मामले में साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर की जमानत याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। गौरतलब है कि वर्ष 2008 में हुए मालेगांव विस्फोट में छः लोग मारे गए थे और सैकड़ों घायल हुए थे। (2 सितम्बर, आईएएनएस)

यदि भ्रष्टाचार मिटाना है तो सनातन धर्म की ओर जाना होगा : डॉ० स्वामी

एनजीओ की मनमानी पर अंकुश लगाया जाय : श्री सिंहल

लखनऊ, 28 अगस्त। 'यदि दीर्घकालिक भ्रष्टाचार मिटाना है तो सनातन धर्म की ओर जाना होगा। यह भौतिकवाद खत्म करता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद में भी भौतिकता और आध्यात्मिकता के समन्वय की बात की गई है।'

स्थानीय माधव सभागार में विहिप–अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक जी सिंहल के नागरिक अभिनन्दन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ0 सुब्रमण्यन स्वामी ने उक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि इस देश में काला धन नासूर बनता जा रहा है। इसकी वजह से ही मंहगाई बढ़ रही है। उन्होंने चुनाव में इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन के इस्तेमाल पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि कांग्रेस इसमें गणित कर इसका लाभ उठा रही है। जहां तक दुनिया के विकसित देशों की बात है तो वहां आज भी निष्पक्ष चुनाव के लिए बैलट पेपर का ही प्रयोग किया जा रहा है। अन्ना हजारे के आन्दोलन पर उन्होंने टिप्पणी की कि उन्होंने भ्रष्टाचार के प्रति लोगों की चेतना जागृत की है, दिखाया कि एक फकीर क्या कर सकता है।

श्री अशोक जी सिंहल ने कहा कि देश में जमकर धर्मान्तरण चल रहा है और इसके लिए काफी विदेशी धन आ रहा है, इससे गांव–गांव में चर्च तैयार हो रहे हैं लेकिन उन्हें रोकने वाली कोई ताकत नहीं है। उन्होंने पद्‌मनाभन व पुट्टपर्थी मंदिरों का उदाहरण देते हुए कहा कि हिन्दू समाज के पास भी धन की कमी नहीं है लेकिन इस धन पर हिन्दू समाज का अधिकार नहीं है, सारे

साभार : दैनिक जागर 8 सितम्बर

मंदिरों को सरकार ने अधिग्रहीत कर रखा है। इसीलिए मंदिरों के इस धन से धर्मार्थ कार्य के लिए एक पैसा भी खर्च नहीं हो पा रहा है। दक्षिण भारत में मंदिरों की संख्या में आ रही कमी पर चिंता व्यक्त करते हुए श्री सिंहल ने कहा कि हिन्दू मंदिरों को अधिग्रहण के जरिए खत्म किया जा रहा है।

सोनिया गांधी की अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय सलाहकार परिषद पर करारा प्रहार करते हुए श्री सिंहल ने आरोप लगाया कि इसमें जितने भी लोग शामिल हैं वे सभी हिन्दू समाज के शत्रु जैसे हैं। उन्होंने सवाल किया कि सोनिया गांधी को इतने बड़े देश में हिन्दू भावनाओं को मानने वाला कोई नहीं मिला। उन्होंने कहा कि यह सलाहकार परिषद देश की बयासी प्रतिशत हिन्दू जनता को प्रताड़ित करने के लिए साम्प्रदायिक हिंसा संबंधी कानून बना रही है। कई बड़े घोटाले करने के बाद अब संप्रग सरकार इंदिरा गांधी की तर्ज पर नया आपात्‌काल लागू करना चाहती हैं। सरकार हिन्दुओं पर नकेल डालकर राज करना चाहती है। इस बिल से हिन्दू समाज के अस्तित्व को खतरा है, इसलिए लड़ाई तो लड़नी ही पड़ेगी।

उन्होंने सरकार व विदेशों से मदद ले रहे एनजीओ को मनमानी करने की आजादी पर अंकुश लगाने पर जोर दिया। उनका कहना था कि कुछ एनजीओ विदेशी धन के बल पर देश में धर्मान्तरण को बढ़ावा दे रहे हैं। विहिप प्रमुख ने अमेरिका की नकल करने की प्रवृत्ति बढ़ने पर चिन्ता जताते हुए आशा व्यक्त की कि कम्युनिज्म की तरह अमेरिकी पूंजीवाद का भी जल्द ही अंत होगा।

श्री सिंहल ने यह भी रहस्योद्‌घाटन किया कि अन्ना हजारे के अनशन के समय रामलीला मैदान में लगभग बीस हजार विहिप–संघ कार्यकर्ताओं ने बगैर प्रचार किए भोजन पैकेट वितरित किए।

स्मरण रहे श्री अशोक जी सिंहल का आश्विन कृष्ण पंचमी (इस बार 17 सितम्बर) आंग्ल कैलेन्डर के अनुसार 27 सितम्बर को 86वां जन्मदिवस है। विहिप की अवध प्रांत इकाई ने उक्त सन्दर्भ में श्री सिंहल का नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया।

कार्यक्रम के संयोजक विहिप –लखनऊ महानगर अध्यक्ष कन्हैया लाल अग्रवाल ने श्री सिंहल को रजत कमल भेंट किया। श्री सिंहल ने संगठन से जुड़े वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। विहिप के अवध प्रांत की ओर से प्रकाशित स्मारिका 'युगदृष्टा' का विमोचन किया गया।

shivank_2001@rediffmail.com
प्रस्तुति : नरेन्द्र भदौरिया
अवध प्रांत अध्यक्ष–विहिप

'भारत की हिन्दू राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठापना नरसिंह जोशीजी को सच्ची श्रद्धांजलि'

ग्वालियर, 17 अगस्त। 'राष्ट्रवादी चिंतक एवं प्रखर वक्ता स्व. नरसिंह जोशी सच्चे कर्मयोगी हिन्दू राष्ट्रवादी विचारक होने के साथ–साथ आदर्श महापुरुष भी थे। वे हमेशा कहा करते थे कि हमें हर हाल में इस देश को हिन्दू राष्ट्र बनाना है, तभी हमारा राष्ट्र विश्व में मजबूती से खड़ा हो पाएगा। स्व. जोशी जी हमेशा गैर राष्ट्रवादी ताकतों को सबक सिखाते रहे और अंतिम क्षणों तक देश के बारे में चिंतन करते रहे।' उक्त विचार सनातन धर्म मण्डल में स्व. नरसिंह जोशी की श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने व्यक्त किए। विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल का शोक संदेश भी पढ़कर सुनाया गया।

श्रद्धांजलि सभा में अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए शिक्षाविद् श्रीकृष्ण त्र्यंबक काकिर्डे ने कहा कि श्री जोशी जी हमेशा कहा करते थे कि हमें हर हाल में इस देश को हिन्दू राष्ट्र बनाना है। पूर्व महापौर विवेक शेजवलकर ने कहा कि स्व. जोशी ने संगठन मंत्री के पद का दायित्व बखूबी निभाया। विहिप की केन्द्रीय मंत्री श्रीमती मीनाक्षी ताई ने कहा कि मेरा विश्व हिन्दू परिषद में आना श्री जोशी की देन है। वे हमेशा मुझे शिवाजी, वीर सावरकर एवं स्वामी विवेकानन्द आदि महापुरुषों के प्रसंग सुनाते थे जिससे मैं अपने आप राष्ट्रवादी संगठन विश्व हिन्दू परिषद से जुड़ गई। वे ऐतिहासिक प्रसंग सुनाकर सभी समस्याओं का हल करते थे, ऐसे महापुरुष को इतिहास में जगह अवश्य मिलनी चाहिए।

पूर्व सांसद जयभान सिंह पवैया, बजरंग दल के प्रान्त संयोजक पप्पू वर्मा, हिन्दू महासभा के जयवीर भारद्वाज ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभा का संचालन विभाग सहमंत्री ब्रजमोहन श्रीवास्तव ने किया।

महाराष्ट्र समाज ने दी श्रद्धांजलि

श्री नरसिंह जोशी के निधन पर महाराष्ट्र समाज की ओर से शोक सभा का आयोजन किया गया। शोक सभा में वक्ताओं ने कहा कि श्री जोशी जी ने सार्वजनिक जीवन में आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना के लिए प्रामाणिक प्रयास किए। वे कुशल संगठक व इतिहास वक्ता थे। उनका निधन न केवल ग्वालियर के लिए अपितु राष्ट्र के लिए एक क्षति है।

शोक सभा में महाराष्ट्र समाज के अध्यक्ष जयंत भिड़े, वरिष्ठ नेता ध्यानेन्द्र सिंह, पूर्व महापौर विवेक नारायण शेजवलकर, डॉ. रघुनाथराव पापरीकर एवं अतुल तारे ने अपनी शोक संवेदना प्रकट की। अनेक संगठनों ने अपनी शोक संवदेना व्यक्त की। सभा का संचालन नितिन बालंबे ने किया।

15 अगस्त को सायं विश्व हिन्दू परिषद कार्यालय **भोपाल** में महानगर के कार्यकर्ताओं की बैठक में स्व. नरसिंह जोशी को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। विहिप के संयुक्त महामंत्री चम्पतराय एवं वाई. राघवुलू सहित प्रान्त एवं महानगर के तीनों जिलों के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

हिन्दुत्व के प्रति आग्रही स्व0 नरसिंह जोशी

स्वर्गिक गोलोक में हाल ही में पहुंचे स्व0 नरसिंह जी जोशी मेरे परम मित्र थे। हिन्दू महासभा के अन्तर्गत निर्मित हिन्दू राष्ट्र सेना का निर्माण 1940 में हुआ तब मैं राम सेना नाम की संस्था में कार्यरत था जो बाद में हि.रा. सेना बनी। 1941 में स्व0 नरसिंहजी भी हि0रा0 सेना के सदस्य बने। हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व, अखण्ड भारत हेतु किसी सेना की आवश्यकता थी। जिसकी एक स्त्री शाखा भी ग्वालियर में थी। मैं वहां शिक्षक बनकर (1944) जाता था तब भाभी (श्रीमती जोशी) भी सदस्य थीं। अतः मेरे प्रति उनका स्नेह तथा परिचय पारिवारिक सदस्य के रूप में परिणत हो गया।

मैं 1946–47 में भिण्ड में प्रचारक रहा, 6 माह बाद मेरे स्थान पर स्व0 नरसिंह जी वहां आए। वे एक उत्तम वक्ता, साहित्यकार तथा शीघ्र लेखक थे। विषय गोरक्षा–संवर्द्धन–हिन्दुत्व–अखण्ड भारत तथा संगठन रहा। संपूर्ण जीवन उन्होंने इस कार्य हेतु समर्पित किया जिसमें गोरक्षा प्रमुख विषय था। इस हेतु वे संपूर्ण भारत में विहिप के अन्तर्गत कार्य करते रहे और अ0भा0 गो0 समिति के अध्यक्ष रहे।

एक बार भाभीजी की तैनाती (शिक्षिका) पद पर सेहराई गांव (जिला–गुना–मध्य प्रदेश) मे हुई। वहां मैं कुछ समय डाकू प्रभावित क्षेत्र में तैनात रहा। पुलिस चौकी के सामने बस रूकी (1954)। तब उन्हें दो बच्चों के साथ उतरते देखा, मुझे आश्चर्य हुआ, मैंने चौकीदार के जरिए सरपंच को बुलाया तथा सरपंच को कहा कि यह मेरी भाभी हैं। इनके मकान तथा सुरक्षा का उत्तरदायित्व सरपंच को सौंपा, मेरी आंखों में दुःखाश्रु, ये कैसी अवस्था, किस जगह तैनाती, उनका धैर्य देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। मैं 1985 में से0नि0 के 1 वर्ष उपरान्त कर्णावती आया, उसके उपरांत जब कभी भी ग्वालियर जाता तो जोशीजी से अवश्य मिलता। फरवरी 2011 की 6–7 तारीख को दोनों से मिला, दोनों की प्रकृति नाजुक थी, भाभी जी की मृत्यु के बाद केवल 1 ही माह में भगवान् ने उन्हें अपने पास बुला लिया। ईश्वर इच्छा बलवान्!

उनके निधन से विहिप ने एक समर्पित श्रेष्ठ कार्यकर्ता–मैंने एक परम कर्त्तव्यनिष्ठ मित्र को खोया। ईश्वर दोनों को गोलोक में उचित स्थान देवेंगे। साथ ही उनकी आत्मा की शांति तथा समस्त परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति।

– **वसंत नारायण आपटे**
बी–11, टेनामेण्ट, जिनेश्वर, पार्ट–1,
पोस्ट घाटलोडिया, अहमदाबाद–380 061
(गुजरात)

चीन ने खोजा ब्रह्मपुत्र व सिन्धु नदियों का उद्गम

बीजिंग (एजेन्सी), 23 अगस्त। ब्रह्मपुत्र पर बांध बनाने समेत तिब्बत में कई जल परियोजनाओं को अंजाम देने के लिए तैयार बैठे चीन के वैज्ञानिकों ने तिब्बत की सीमा से बहने वाली नदियों के उद्गम स्थल और उनके मार्ग की लम्बाई का व्यापक उपग्रह अध्ययन पूरा कर लिया है। चाइनीज अकादमी ऑफ साइंसेज (सीएएस) के वैज्ञानिकों ने ब्रह्मपुत्र के मार्ग का उपग्रह से ली गई तस्वीरों का विश्लेषण करने के साथ भारत–पाकिस्तान से बहने वाली सिन्धु और म्यांमर के रास्ते बहने वाली सालवीन और इरावदी के बहाव के बारे में भी पूरा विवरण जुटा लिया है।

लियू ने अपने विश्लेषण के आधार पर बताया कि ब्रह्मपुत्र का उद्गम स्थल तिब्बत के बुरांग काउंटी स्थित हिमालय पर्वत के उत्तरी क्षेत्र में स्थित आंग्सी ग्लेशियर हैं न कि चीमा–युंगडुंग ग्लेशियर, जिसे भूगोलविद् स्वामी प्रणवानंद ने 1930 के दशक में ब्रह्मपुत्र का उद्गम बताया था।

विक्टोरिया पुलिस भी हटवा सकती है नकाब

मेलबर्न (प्रेट्र), 29 अगस्त। ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्थ प्रांत की तरह यहां के विक्टोरिया प्रांत में भी मुस्लिम महिलाओं को पुलिस के कहने पर अपने चेहरे से नकाब हटाना होगा। अन्यथा उन्हें गिरफ्तार कर लिया जायेगा। विक्टोरिया के पुलिस मामलों के मंत्री पीटर स्यान ने कहा, 'प्रांतीय पुलिस के पास यह अधिकार होगा कि वह महिलाओं से नकाब हटाने के लिए कह सकती है। ऐसा न करने पर उन्हें हिरासत में लिया जा सकता है। 'द हेराल्ड सन' अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक, विक्टोरिया सरकार ने जुलाई में इस मामले को लेकर कानूनी राय मांगी थी। इससे पहले न्यू साउथ वेल्स में बुर्का पहनकर वाहन चलाने वाली महिलाओं के लिए एक विशेष कानून लाया गया था।

पत्थर मार-मार कर तालिबान कमाण्डर की हत्या

वाशिंगटन (एजेन्सी), 23 अगस्त। दक्षिणी अफगानिस्तान में गुस्साए ग्रामीणों ने एक वरिष्ठ तालिबान कमाण्डर और उसके अंगरक्षक की पत्थर मार–मार कर हत्या कर दी। कमाण्डर ने एक 60 साल के बुजुर्ग को सरकारी मुखबिर होने का आरोप लगाते हुए गोली मार दी थी। 'न्यूयार्क टाइम्स' ने जिला परिषद के सदस्य हाजी हवातुल्लाह के हवाले से खबर दी है कि घटना हेलमंद प्रांत में रविवार शाम की है।

तरेख जाबेर गाँव की मस्जिद के पास याद मोहम्मद अपने दो बेटों के इफ्तार का इंतजार कर रहे थे तभी मोटर साईकिल सवार दो तालिबान वहां आए और उन्होंने यार मोहम्मद को अपने पास बुलाया। इफ्तार का इंतजार कर रहे मोहम्मद जब उनके पास गए तो उन्हें गोली मार दी। उनकी मौके पर ही मौत हो गई। पिता को गोली लगने के बाद मोहम्मद के दोनों बेटों ने मोटरसाइकिल सवारों को खींचकर नीचे गिरा दिया तभी कुछ और लोग वहां आ गए और उन्होंने पत्थर मार–मार कर दोनों की हत्या कर दी।

हथियारबंद तालिबानों के साथ ऐसी हिंसक घटना बहुत कम होती हैं। एक स्थानीय अधिकारी ने कहा कि लोगों ने घोषणा की है कि अब वह तालिबानों की ज्यादती नहीं सहेंगे।

जिम्बाब्वे के सांसदों को कराना होगा खतना

डरबन (प्रेट्र), 29 अगस्त। एचआइवी और एड्स को फैलने से रोकने के अभियान के तहत में सभी पुरुष सांसदों को खतना कराना होगा। जिम्बाब्वे की उप प्रधानमंत्री थोकोजानी खुपे ने यह जानकारी दी है। अखबार 'संडे मेल' के अनुसार खुपे ने कहा है कि 150 सदस्यों वाली जिम्बाब्वे की संसद के पुरुष सदस्यों सहित शहरी और ग्रामीण निकायों के पुरुष सदस्यों को एक छोटे से ऑपरेशन से गुजरना होगा।

बकौल खुपे, शोधकर्ताओं का मानना है कि जिन पुरुषों का खतना होता है, उनके एचआईवी और एड्स की चपेट में आने की आशंका आठ गुना तक कम रहती है।

अग्निवेश के एनजीओ पर दिल्ली सरकार ने लुटाए १८ लाख रुपये

नई दिल्ली, 29 अगस्त। साठ पन्ने की रिपोर्ट और उसके खर्च का ब्यौरा 160 पन्नों में। सरकार और गैर सरकारी संगठनों के बीच 'मधुर संबंध' का एक नमूना देखिए। दिल्ली सरकार ने बंधुआ मजदूरों के सर्वे के लिए सभी नियम और शर्तों को दरकिनार कर स्वामी अग्निवेश के बंधुआ मुक्ति मोर्चा को 18 लाख रुपये जारी कर दिए। जैसे आनन–फानन में रुपये जारी हुए, एनजीओ ने वैसी ही बिना किसी मतलब की रिपोर्ट भी जारी कर दी। सर्वे कहां किया गया पता नहीं, लेकिन उसके खर्च का ब्योरा 'मुकम्मल' है।

खर्च के लिए क्या है दिशा-निर्देश

सर्वे के तहत मिली राशि सर्वे के लिए सवाल तैयार करने, सर्वेक्षण में जुड़े लोगों के प्रशिक्षण, डाटा एकत्र करने, उनके संकलन और कम्प्यूटरीकरण के लिए ही खर्च की जा सकती है। मजदूरी के पुनर्वास के लिए अलग से मद दी जाती है।

सर्वे में गेहूं, चावल जैसे किराने के साथ–साथ आफिस के टेलीफोन का बिल तक शामिल है। मगर बंधुआ मजदूर कहां थे, कौन नियोजक था, इसका कोई ब्यौरा नहीं है। दिल्ली सरकार की इस अंधेरगर्दी भरी दरियादिली के पांच वर्ष बाद अब नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) इस साठगांठ की जांच करने की तैयारी में है। मामला 2006 का है। (दै. जागरण)

– आशुतोष झा

अयोध्या मामला : उच्च न्यायालय ने सीबीआई से मांगा जवाब

लखनऊ, 2 सितम्बर। अयोध्या में विवादित ढांचा गिराए जाने के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने एक सप्ताह में सीबीआई से जवाब मांगा है। पीठ ने यह आदेश रायबरेली जिला अदालत में चल रही सुनवाई को चुनौती देने वाली याचिका पर दिया है। इस मामले में जिला जज रायबरेली ने महीने में दस दिन तक लगातार सुनवाई के आदेश दिए हैं। अगली सुनवाई एक सप्ताह बाद होगी।

याची विष्णु हरि डालमिया ने याचिका प्रस्तुत कर कहा है कि जिला जज रायबरेली को आदेश देने का अधिकार नहीं है। याचिका में जिला जज का आदेश खारिज किए जाने की मांग की गई है। न्यायमूर्ति राजीव शर्मा व न्यायमूर्ति एससी चौरसिया की खंडपीठ ने याची के अधिवक्ता कुंवर मृदुल राकेश

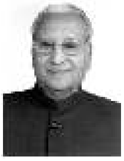

की दलील को सुनने के बाद सीबीआई से जवाब तलब किया है। रायबरेली की अदालत में विवादित ढांचा गिराए जाने की सुनवाई चल रही है। कहा गया कि मामले में सीबीआई ने शीघ्र सुनवाई का प्रार्थनापत्र इलाहाबाद रजिस्ट्रार जनरल को दिया। इस आदेश के आधार पर जिला न्यायाधीश रायबरेली ने भी आदेश जारी कर इस मामले की प्रति दूसरे दिन सुनवाई किए जाने के आदेश दिए। सीबीआई से पीठ ने एक सप्ताह में जवाब मांगा है। (एजेन्सी)

न्यायाधीश को प्रभावित करने की कोशिश नहीं की–

कांची–शंकराचार्य

कांचीपुरम्, 27 अगस्त (भाषा)। शंकररमन हत्याकाण्ड में प्रमुख आरोपी कांची कामकोटिपीठ के शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी ने इन आरोपों को खारिज किया है कि उन्होंने

मामले की सुनवाई कर रहे न्यायाधीश को प्रभावित करने की कोशिश की थी।

स्वामी जी ने कहा कि कांची शंकर मठ की 69 से अधिक 'गुरु परम्पराओं' की परम्परा रही है। परम्परा ने हमेशा 'धर्म' और 'न्याय' का सम्मान किया है। उन्होंने कहा, 'स्पष्ट है कि कोई ऐसा है जो नहीं चाहता कि मामला निष्कर्ष पर पहुंचे और वह इसे लंबा खींचना चाहता है या कोई ऐसा व्यक्ति है जो इस तरह की स्थिति उत्पन्न कर धन बनाना चाहता है। वे इस तरह की चीज लेकर आए हैं। मैं शुभचिंतकों से कहना चाहता हुं कि वे धर्म और न्याय में विश्वास रखें और शांति बनाए रखें।' गत दिनों मीडिया में आई खबरों से वे दु:खी और हैरान हैं जिनमें उन पर मामले की सुनवाई कर रहे न्यायाधीश से सौदेबाजी का आरोप लगाया गया है।

स्वामी लक्ष्मणानन्द जी की हत्या की जांच सी.बी.आई. से कराने की मांग

फुलबनी (ओडीशा) : विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता अशोक कुमार साहू ने कहा है कि स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती के हत्यारों को पकड़ने में राज्य सरकार पूरी तरह असफल रही है।

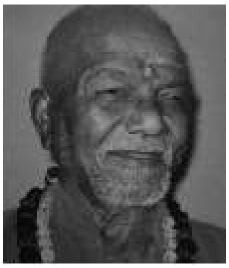

स्वामीजी के तीसरे बलिदान दिवस पर 23 अगस्त को यहां आयोजित एक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए श्री साहू ने चेतावनी दी कि यदि राज्य सरकार अगले साल इसी दिन तक स्वामीजी के हत्यारों को पकड़ने में नाकाम रही तो विश्व हिन्दू परिषद विशाल पैमाने पर आन्दोलन छेड़ने के लिए बाध्य होगी। अभी तक इस हत्या में शामिल सात लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

उल्लेखनीय है कि स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती तथा उनके चार शिष्यों की 23 अगस्त, 2008 की रात को उनके जलासपेटा आश्रम में हत्या कर दी गयी थी। उन चार शिष्यों में शामिल थे–श्री किशोर बाबा, माता अमृतामयी, माता भक्तीमयी तथा पुरन्जन गंडा।

हिन्दू जागरण मंच, कंध सुरक्षा मंच, भाजपा, जिला लेखक समुख्य, बजरंग दल, और कुई समाज के लोगों ने इस बलिदान दिवस कार्यक्रम में भाग लिया।

राष्ट्रपति को सम्बोधित एक ज्ञापन स्थानीय जिला कलेक्टर को दिया गया, जिसमें स्वामीजी के हत्यारों को अविलम्ब गिरफ्तार करने की मांग की गयी। साथ ही इस हत्याकांड की जांच सीबीआई को सौंपने की मांग भी की गयी।

(ई.एन.एस. 24 अगस्त)

प्रेषक : केशवानन्द मुंजाल

संसद की गरिमा कौन गिरा रहा है ?

*कोई इस सरकार से पूछे कि संसद की गरिमा कौन गिरा रहा है?जनांदोलनों से संसद की गरिमा नहीं गिरती। सदन की गरिमा गिरती है, ए.राजा, कनिमोझी और कलमाडी जैसे सांसदों से। संसद की गरिमा गिरती है इस सूचना से कि 543 सांसदों में से कोई डेढ़ सौ (28 प्रतिशत) अपराधिक पृष्ठभूमि के हैं। सदन की गरिमा गिरती है, कैबिनेट प्रणाली के इतर एक सुपर कैबिनेट से जिस **राष्ट्रीय सलाहकार परिषद** कहते हैं। संसद की गरिमा गिरती है। जब संसदीय फैसले सदन के बाहर **10 जनपथ** में लिए जाते हैं। संसद की गरिमा अन्ना नहीं गिरा सकते, जिनकी आस्था गांधीवादी मूल्यों में है। सादगी, ईमानदारी और सत्याग्रह जिनके हथियार हैं। है, किसी राजनीतिक दल में ताकत जो समूचे देश में इतने लोगों को सड़कों पर निकाल दे। (26 अगस्त, 2011)*

–हेमन्त शर्मा

नादरोही (हिमाचल) के दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में श्रीमती मालती शर्मा (मातृशक्ति-क्षेत्र संयोजिका), कैलाश सिंहल (क्षेत्रीय संगठन मंत्री-विहिप), विष्णुदत्त, चम्पतराय (के0सं0म0-विहिप) व गोविन्ददासजी

प्रस्तावित साम्प्रदायिक एवं लक्ष्यित हिंसा अधिनियम-2011 के विरोध में मेरठ (उ.प्र.) में आयोजित धरना की अध्यक्षता करते गुरुकुल प्रभात आश्रम के पीठाधिपति स्वामी विवेकानन्दजी

अखण्ड भारत दिवस- 14 अगस्त

मेरठ में आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित करते विहिप-क्षे. संगठन मंत्री महावीरजी

भिलाई (छत्तीसगढ़) में मशाल जुलूस

जोधपुर (राजस्थान) में मशाल जुलूस

कोलकाता में आयोजित संगोष्ठी में अशोक दुबे, पितारन मुखर्जी, संदीप चौधरी, राजकुमार मण्डल तथा अमित कुमार सिंह

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

DL-SW-15/4031/2009-11
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516 / 98
मुद्रण- तिथिः 13.09.11
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

विकास में सब साथ-साथ, कहता है नयी बात

देश का दिल

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

- लोक सेवा प्रदाय गारंटी कानून के तहत लगभग 34 लाख से अधिक लोगों को निर्धारित समय-सीमा में सेवाएं प्राप्त। प्रदेश के विकासखण्डों में अब उप लोक सेवा केंद्र खोलने का निर्णय। अब नागरिकों को विभिन्न सेवाओं का लाभ लेने के लिए अलग-अलग जगह जाने की जरूरत नहीं होगी।
- फल-फूल, औषधि फसलों और सब्जी की फसलों को मंडी अधिनियम परिधि से बाहर रखने का निर्णय। किसानों को अब ये उत्पाद बेचने की स्वतंत्रता। बाहर जाने वाली सब्जी की टैक्स जांच से मुक्ति।
- भूमि अधिग्रहण पर न्यूनतम 5 लाख रुपये प्रति एकड़ मुआवजा।
- कृषि आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत करने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य।
- खेती को लाभ का व्यवसाय बनाने एवं समन्वित विकास के लिए मध्यप्रदेश में 'कृषि केबिनेट' का गठन। कृषि केबिनेट के फैसलों को मंत्री परिषद के फैसलों का दर्जा। समिति के फैसलों पर आदेश सीधे जारी करने की व्यवस्था।
- किसानों को स्थाई विद्युत पम्प कनेक्शन के लिए अनुदान योजना में संशोधन। अब प्राक्कलन की सीमा एक लाख रुपये से बढ़कर डेढ़ लाख रुपये।
- सोलह प्रतिशत पर मिलने वाला सहकारी ऋण अब किसानों को महज एक प्रतिशत ब्याज दर पर। 1273 करोड़ रुपये से बढ़कर अब वितरण लक्ष्य हुआ 6500 करोड़ रुपये। सरकार के इस निर्णय से प्रदेश के एक करोड़ से अधिक किसान लाभान्वित।
- किसानों के बैंक खातों में अनुदान बोनस तथा अन्य राहत राशि सीधे जमा कराने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य।
- गेहूं के समर्थन मूल्य पर 100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से 500 करोड़ रुपये का बोनस देने वाला मध्यप्रदेश अग्रणी राज्य।
- राज्य में जैविक कृषि नीति निर्धारित। नीति का उद्देश्य मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार, कृषि लागत में कमी तथा खेती को लाभकारी बनाना।
- किसान कॉल सेंटर के माध्यम से 4 लाख किसानों की समस्याओं का समाधान।
- प्रदेश में मुख्यमंत्री बाल हृदय उपचार योजना प्रारंभ। अब 15 वर्ष तक के बच्चों के हृदय रोग का इलाज सरकार की जिम्मेदारी।
- विकलांगों की शारीरिक और मानसिक पीड़ा को दूर करता स्पर्श अभियान।
- परिवार कल्याण कार्यक्रम में मध्यप्रदेश को उल्लेखनीय सफलता। साढ़े छह लाख लोगों ने अपनाया परिवार नियोजन। चार संभाग और 27 जिलों में शत-प्रतिशत लक्ष्य पूर्ति।
- राज्य के प्रमुख शहरों को जोड़ने के लिये पर्यटन विकास निगम द्वारा वायु सेवा।
- पिछले वर्ष के मुकाबले आठ सौ प्रतिशत से ज्यादा विदेशी निवेश।
- प्रदेश में 5 अक्टूबर से बेटी बचाओ अभियान आरंभ।
- लाड़ली लक्ष्मी योजना में करीब आठ लाख पच्चीस हजार से अधिक कन्याएं लाभान्वित।
- 15 लाख छात्राओं को मिली साइकिलें।
- मुख्यमंत्री कन्यादान योजना में लगभग डेढ़ लाख कन्याओं के विवाह सम्पन्न।
- एम.पी. ऑनलाइन पोर्टल सेवा का लाभ 28 लाख से अधिक नागरिकों को मिला।
- अनुसूचित जनजाति, विशेष पिछड़ी जनजाति, अनुसूचित जाति तथा विमुक्त जाति के छात्रावासों, आश्रमों में रहने वाले छात्र-छात्राओं की शिष्यवृति की दरें प्रत्येक वर्ष में माह मार्च के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के आधार पर निर्धारित करने का निर्णय। अब छात्रों को 500 रुपये से बढ़ाकर 675 रुपये प्रतिमाह एवं छात्राओं को 525 रुपये से बढ़ाकर 700 रुपये प्रतिमाह शिष्यवृति देने का निर्णय।

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2011

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.-9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित। सम्पादक : मानवेन्द्र नाथ पंकज